ग्लोबल एडवाँस साधन

जीवन पुस्तक

खण्ड – 1

व्यक्तिगत एवम्
सेवकाई बढ़ौतरी
के लिए एक नियम
पुस्तिका

अगुवों को
छूना ...
देशों को
बदलना

डेविड शिबले

डेविड शिबले
द्वारा
ग्लोबल एडवाँस रिसोर्सेज
द्वारा प्रकाशित
ए मिनिस्ट्री ऑफ एडवाँस, आई एन सी.
www.globaladvance.org

यह पुस्तक दुबारा बेची न जाए। इसे दुबारा प्रकाशित करने की इजाजत इस लिए दी जाती है कि इसके पाठ प्रशिक्षण में प्रयोग किए जायें, दुबारा प्रकाशित पुस्तक मुफत में बांटी जाएं।
नोट :- सभी गंधाश न्यू किंग जेम्स वर्शन ''बाईबल'' में से लिए गये है। कापीराइट © 1979, 1980, 1982 द्वारा थामस नेलशन, आई एन सी., प्रकाशक । इस्तेमाल द्वारा परमीशन ।

आई एस बी एन 0-9749202-0-7

हिन्दी में प्रकाशन
जेम्स चाको
न्य एण्ड लिविंग वे
हिन्दी अनुवाद : अंजू सहोत्रा, बी.ए, बी.टीएच।

New & Living Way

PO BOX 1408
CHANDIGARH-160047

विष्य सूची

परिचय

सुसमाचार में रूचिवान

1. वह शुभ संदेश जिसका प्रचार हम करते है 06
2. किस प्रकार से जानेंगे कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं 10
3. पहला चरण 13
4. आश्चर्यजन अनुग्रह 16

बुलाहट एवम् चरित्र

5. विश्वास की पाँच घोषणाएं 19
6. दीर्घ आयु की फलदायी सेवकाई के लिए सुनिश्चितता..... 22
7. परमेश्वर के ग्रहणयोग्य 25
8. बुलाए गए एवम् समर्पित 28
9. उच्च पक्षापात 31
10. परमेश्वर के अपने हृदय के अनुसार 34
11. एक अलगपन का जीवन 38
12. प्राण की सुरक्षा 42
13. पहले यहाँ सेवकाई कीजिए 45
14. शैतान की योजनाएं 49
15. मान्यता रखने वाली बात के लिए जीना 53

सेवकाई एवम्
स्वयं की उन्नति के
लिए एक व्यक्तिगत अध्ययन

जीवन पुस्तक

परिचय

आप परमेश्वर के राज्य के लिए महत्वपूर्ण हैं!

परमेश्वर आपके जीवन के द्वारा महान् कार्य करना चाहते हैं। वे सेवकाई जो उसने आपको दी है वह उसे बढ़ाना चाहता है। परमेश्वर आपको नई कलीसियाओं के निर्माण के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। वह आपको आपके देश के लिए प्रभावकारी सिद्ध कर सकता है। परमेश्वर अपने प्रेम को विभिन्न लोगों में बाँटने के लिए आपको इस्तेमाल कर सकता है, यहां तक कि आपके देश की सीमायों से बढ़कर उसके पास आपके लिए महान् योजनाएं हैं।

इसके लिए आपकी ओर से संकल्प की आवश्यक्ता है। आगे बढ़ने के लिए आपको संकल्प करना चाहिए। **जीवन पुस्तक** आपके प्रभु में बढ़ने तथा शुभ सन्देश का सेवक होने के लिए लिखी गई है। यह स्रोत उन मसीहियों के द्वारा मिला जो आपसे प्रेम करते तथा आप पर भरोसा रखते हैं। यह पाठयक्रम हमारे सन्देश, हमारे चरित्र तथा बुलावे से व्यवहार करता है जो मसीह यीशु के शुभ सन्देश के सेवक हैं।

डेल विट, गलोबल एडवांस के कार्यकर्त्ता एवम् मैने बहुत सारे देशों में गलोबल एडवांस की फरंट लाइन शैप्पड कान्फरेंस में हिस्सा लिया है। इन सभायों में हम संसार के बड़े महान् दासों से मिले हैं- जो आप जैसे ही हैं। गलोबल एडवांस की इच्छा है कि वे आपके हृदय में एक दर्शन रखे तथा पासबानों एवम् कलीसियों के अगुवों के हाथों में हथियार दे। परमेश्वर ने फ्रंटलाइन शैप्पड सभायों को इस्तेमाल किया कि वह हज़ारों पासबानों के हृदयों में दर्शन डाल सके। हमारी प्रार्थना है कि वह **जीवन पुस्तक** को उनके हाथों में जीवन देने वाले हथियार के रूप में लेकर इस्तेमाल करे।

जीवन पुस्तक से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के कुछ सुझाव हैं:-

- जब आप इसे पढ़ते हैं तो प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपके लिए सच्चाई प्रगट करे तथा जिस सच्चाई को आप सीखते हैं उसे अभ्यास में लाने के लिए मदद करें।
- जीवन पुस्तक को बाईबल खुला रख कर पढ़ें। जीवन की पुस्तक में बाईबल के गद्यांश नहीं छापे गए। केवल आयतें दी गई हैं। उसके लिए कारण यह है कि बाईबल में से गद्यांश देखने से आप परमेश्वर के वचन से अधिक परिचित तथा उसकी महान् सच्चाईयों को जान सकते हैं।

- सप्ताह में एक भाग पढ़ें। एक सप्ताह तक एक ही अध्याय पढ़ने से आप अपने मन एवम् आत्मा में विशेष भाग को जान पाऐंगे।
- प्रत्येक अध्याय के अन्त में बाईबल की आयतों को याद करें। सेवक के लिए सबसे बड़ा हथियार परमेश्वर के वचन के विषय का ज्ञान है। पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल करेगा जो आपके हृदय में छिपा हुआ है।
- प्रत्येक अध्याय की विशेष सच्चाई पर मनन करो। ये सच्चाईयां आपके जीवन को बदल सकती हैं। पवित्र आत्मा को आपकी सेवकाई करने की अनुमति दें तांकि वह आपकी आत्मा की गहराई में जीवन देने की बातों को डाले।
- जो कुछ भी आप सीखते हैं उसकी योजना बनाएं। 'आपकी प्रतिक्रिया' का हिस्सा जो प्रत्येक अध्याय के अन्त में है आपके लिए अवसर है कि आप जीवन देने की सच्चाई को जीवन बदलने की क्रिया में बदलें। याद रखें कि आप इस बात का इरादा बनाऐं कि जो कुछ आप सीखते हैं उसे करें।
- सप्ताह एक का अध्याय दूसरों के साथ शुभ समाचार बाँटने के लिए इस्तेमाल होगा। जहां कहीं भी आप जाते हैं अपने साथ **जीवन पुस्तक** ले जाएं। सप्ताह एक के अध्याय को आप सेवकाई का हथियार मान सकते हैं। आप मसीह के गवाह बन सकते हैं तथा आप लोगों की सप्ताह एक अध्याय को पढ़के तथा प्रतिक्रिया को देख कर विश्वास में अगुवाई कर सकते हैं।

जैसे आप मसीह में बढ़ते हैं परमेश्वर आपको आशीष दे तथा उसके लिए आपकी सेवकाई में यीशु ने कहा, "इसके द्वारा मेरा पिता महिमा पाया, ताकि आप फलों को उत्पन्न करो; और मेरे चेले बनो" (यूहन्ना 15:8)। मेरी यही प्रार्थना है कि परमेश्वर **जीवन पुस्तक** को बहुत सारा फल उत्पन्न होने के लिए प्रयोग करें।

डेविड शिबले
प्रैज़ीडैंट, ग्लोबल एडवाँस

जीवन पुस्तक

वह शुभ संदेश जिसका प्रचार हम करते हैं

जीवन में सबसे महत्वपूर्ण एवम् रोमांचित खोज परमेश्वर के घर की राह ढूंढना है। यहां कुछ चिन्ह हैं जो हमें उसके घर की दिशा दिखाते हैं।

प्रेमी-परमेश्वर का हृदय आपकी ओर

प्रत्येक वस्तु का रचयिता होते हुए, परमेश्वर सिद्ध तथा पवित्र है। उसके अनन्त प्रेम का हृदय आपकी ओर आलिंगन करने को बढ़ता है। उसकी इच्छा है कि वह आपको आपके अपराधों से शुद्ध करे। वह आपको हृदय तथा मन की शान्ति, जीने का उदेश्य् एवम् उसके साथ स्वर्गीय घर का आश्वासन देना चाहता है।

बाईबल बताती है ...

चोर /शैतान/ किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इस लिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। (यूहन्ना 10:10)

प्रेम इसमें नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।

(1 यूहन्ना 4:10)

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, तांकिजो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए ।

(यूहन्ना 3:16)

क्षमा एवम् संगति-परमेश्वर के लिए आपकी आवश्यकता

प्रत्येक स्थानों में लोगों के मध्य में सबसे अधिक निराशाजनक आवश्यकता परमेश्वर से क्षमा एवम् उसके साथ संगति की संभाल करना है। आनन्द एवम् अधिकार हमें परमेश्वर की तलाश की ओर ले जाता है। जबकि हम परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द लेने के लिए सिरजे गए, मानवता ने परमेश्वर के राज्य के विरूद्ध बलवा करके स्वयं के सम्बन्ध को उससे तोड़ दिया। यह बलवा सम्मुख पाप की जड़ है तथा इस संसार में उसका प्रतिउत्तर उदासी के रूप में मिला।

परमेश्वर तक पहुँचने के हमारे

मानुषिक कार्य अयोग्य साबित हुआ।
बाईबल बताती है ...

हम तो सबके सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।(यशायाह 53:6)परन्तु हमारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। (यशायाह 59:2)

इस लिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23)

क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)

> क्योंकि परमेश्वर एक ही हैं आर परमेश्वर आर मनुष्य के बीच में भीएक ही बिच्वई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य ह।
> 1 तिमुथियुस 2:5

यीशु मसीह - आपके लिए परमेश्वर का प्रबन्ध

मसीह यीशु मानुषिक शरीर में परमेश्वर है। परमेश्वर का शाश्वत पुत्र होते हुए वह सिद्ध तथा पाप रहित जीवन जीया। उसकी मृत्यु वह बलिदान है जिसे परमेश्वर ने हमारे अपराधों के लिए क्षमा किया। उसकी मृत्यु के तीन दिन के पश्चात् जो उसने कलवरी पर जान दी, वह शारीरिक रूप से कब्र में से जी उठा, पाप, मृत्यु तथा नरक पर सदा के लिए विजय हुआ। अपराधों के लिए परमेश्वर का एक मात्र प्रबन्ध यह है कि वह इसी वक्त आपके लिए मुआफी एवम् नए जीवन का प्रस्तावन देता है। आप परमेश्वर के घर की राह का अनुभव कर सकते हैं। इसी वक्त आप उसके परिवार का सदस्य बन सकते हो।
बाईबल बताती है ..

यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्धारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। (यूहन्ना14:6)
क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिच्वई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।(1 तीमुथियुस 2:5)

तो उसने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं,

जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। (तीतुस 3:5)इस लिए कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। (1 पतरस 3:18)

पश्चाताप् एवम् विश्वास - मसीह में आपका समर्पण

स्वयं को मसीह के हाथों में समर्पित करने से क्या अभिप्राय है? प्रथम, इसका अर्थ है आपके रहने के पुराने तरीके से पश्चाताप् एवम् मुड़ना। मसीह की ओर बढ़ने के लिए आपको प्रत्येक पापों से मुड़ना तथा स्वयं को बचाने के लिए स्वयं के प्रत्येक मानुषिक प्रयासों को त्यागना होगा।

इस समर्पन का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से यीशु की मृत्यु पर विश्वास रखना जो कि हमारे पापों की एक मात्र अदाइगी है। क्योंकि उसने आपको आपके लहू से खरीदा है; इसका अर्थ है कि स्वयं के जीवन के द्वारा यीशु मसीह को आदर देना। इस समर्पन को बनाने का समय, मसीह अभी आपके पास है। बाईबल बताती है ...

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:12)

कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है। ... "क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"
(रोमियों 10:9, 10, 13)।

इसे अपने हृदय की प्रार्थना बनाएं:

प्रभु यीशु, मेरे लिए सलीब पर अपने प्राणों को देने के लिए धन्यवाद। इसी वक्त मैं अपने पापों का पश्चाताप् करता हूँ तथा आपके बहाए गए लहू को अपने सम्पूर्ण पापों की भुगतान मानता हूँ। अभी मैं आपको अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करता हूँ तथा मेरे जीवन को आपके लिए समर्पित करता हूँ मेरी प्रार्थना सुनने के लिए, मेरे अपराधों को क्षमा करने के लिए, तथा मेरे जीवन में वादा के रूप में आने के लिए धन्यावाद। आमीन।

यदि आपने विश्वास एवम् ईमानदारी से इस प्रार्थना को माँगा है, परमेश्वर के परिवार में आपका स्वागत है। मसीह यीशु ने आपके जीवन में आने का वादा किया जब, विश्वास तथा पश्चाताप् करके, आपने उसको अपना प्रभु करके आमन्त्रित किया। बाईबल कहती है, "और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।" (1 यूहन्ना 5:11, 12)।

याद करें:

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:12)

मूल सिद्धान्त:

सलीब पर उसकी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने मुक्ति की ओर राह खोला तथा प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए अनन्त जीवन जिसने अपने पापों का पश्चाताप् किया तथा विश्वास से उसे प्रभु एवम् मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण किया।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या आपने अपने जीवन से मसीह के संग व्यक्तिगत् समर्पन किया?
- इस सप्ताह में आप किसी दूसरे के साथ शुभ समाचार बाँटने के लिए क्या करेंगे?
- किस रीति से परमेश्वर आपको अधिकतम् गिनती के लोगों तक शुभ-समाचार सुनाने को इस्तेमाल करेगा?

<u>नोट:</u> यह सन्देश अमरीकी टरैक सोसाइटी की ओर से, शुभ सन्देश के रूप में प्राप्त होगा, पी.ओ. बॉक्स 462008, गारलैंड, टैक्सास 75046 यू एस ए यां www.gospelcom.net/ats

जीवन पुस्तक

नोट

प्रेम - परमेश्वर का हृदय आपकी ओर

क्षमा एवम् संगति -
परमेश्वर के लिए आपकी आवश्यकता

यीशु मसीह -
आपके लिए परमेश्वर का प्रबन्ध

पश्चाताप् एवम् विश्वास -
मसीह में आपका समर्पन

जीवन पुस्तक

किस प्रकार से जानेंगे कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं

पढ़ेः यूहन्ना 1:12; रोमियों 10:9,10

अपने पापों का पश्चाताप् तथा उसके पुत्र मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर की मुक्ति का वरदान पाकर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में प्रवेश करें। विश्वास के द्वारा, हम उसके सलीब के बलिदान को अपने सम्पूर्ण पापों के भुगतान के रूप में स्वीकार करते हैं। मसीह में बने रहने के लिए बाईबल एक नई शर्त को बताती है। (पढ़े 2 कुरिन्थियों 5:17)

अब, मसीह यीशु पर विश्वास के द्वारा हम उस भयानक दिन से बचाए गए जब परमेश्वर गैर विश्वासियों के पापों तथा उनके विश्वास न करने का दण्ड देगा। (पढ़ो रोमियो 10:9, 10;1 थिस्सलुनीकियों 5:9; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9)

हम मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए गए है - शैतान तथा पाप के नियन्त्रण से छुड़ाए गए हैं। अब हम यीशु से जुड़े हैं। उसने हमारे लिए कीमत चुकाई है। (पढ़े 1 पतरस 1:18, 19)

जब हम मसीह यीशु को अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करते हैं हम बदल जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम हमारे जीवन में उसकी ताकत के द्वारा बचाए गए हैं। (मत्ती 18:3)

अब आप सम्पूर्ण विश्वास से कह सकते हैं कि आप पूर्ण रूप से माफ किए गए हैं तथा परमेश्वर के परिवार के अंग है। कलीसियाओं के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे निश्चित रहें। अधिकतर लोग स्वयं की मुक्ति के लिए संघर्ष करते हैं यहां कुछ तरीके हैं जो उन लोगों की सहायता करना चाहते हैं जो निश्चयता तथा परमेश्वर से जुड़े रहना चाहते हैं।

1. **ध्यान रहे कि आप सम्पूर्ण रूप से अपने पापों का** पश्चाताप् करें, यीशु मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करें तथा उसे अपने जीवन का प्रभु बना लें।

   दूसरे शब्दों में, ध्यान रहे कि व्यक्ति विशेष में वास्तविक बदलाहट आए। इसके अर्थ यह है कि वे किसी भी अपने अच्छे कार्यों के द्वारा नहीं बचाए गए किन्तु केवल यीशु के एक मात्र सलीब के बलिदान के द्वारा ही हमारे पापों की कीमत चुकाई गई।

उस अनन्त जीवन की आशा पर जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है।

तीतुस 1:2

2. मुक्ति की निश्चयता यह है कि यीशु आपके अन्दर निवास करते हैं।

यीशु का यह वायदा है कि जो कोई भी उसे अपनाएगा वह उसके जीवन में आकर रहेगा (पढ़ें: प्रकाशितवाक्य 3:20, यूहन्ना 6:37; 1 यूहन्ना 5:11,12)

3. याद रहे कि मुक्ति आपकी प्रवीणता नहीं किन्तु परमेश्वर की प्रवीणता है। यह परमेश्वर है जो बचाता है। मुक्ति वह नहीं है जो आप करते है, मुक्ति वह है जो परमेश्वर आपके लिए करता है। जैसे एक पुराना भजन कहता है, "यीशु ने सबकी कीमत चुकाई।"

4. आपके लिए परमेश्वर के वायदों पर विश्वास कीजीए।

मसीह में आपके विश्वास के द्वारा, अब आपके पास यह है कि "अनन्त जीवन की आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है।" (तीतुस 1:2)

(मुक्ति के उन अदभुत् वायदों को पढ़े जो यीशु ने आपको दिए है यूहन्ना 5:24; यूहन्ना 10:9, यूहन्ना 10:28,29) अपने भरोसे को उस परमेश्वर पर लगाए जो झूठ नहीं बोलता तथा जिसका वचन सदा के लिए है।

5. अपने विचारों पर आश्रित न होना आपकी मुक्ति की आशा इस बात पर आश्रित नहीं है कि आप किसी भी क्षण कैसा अनुभत करते हैं। बल्कि, आपकी अनन्त काल के जीवन की आशा इस इतिहासिक सच्चाई पर लगी रहे कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, आपके लिए मरा तथा फिर जी उठा। मसीह में नई रचना होते हुए, मूल रूप से आप नए व्यक्ति बने हैं। आपके अपराध क्षमा हुए तथा न्याय के दिन वे आपके विरूद्ध खड़े नहीं होगें। (कुलुस्सियों 2:13) आप प्रतिदिन बदलते हैं क्योंकि अब पवित्र आत्मा आपके अन्दर रहता है। अब आपके पास ईश्वरीय स्वभाव है। (रोमियों 3:22 पढ़े।)

मसीह में आपके पास अनन्त तथा भरपूरी दोनों का जीवन है। अनन्त जीवन का अर्थ यह है कि आप सर्वदा के लिए परमेश्वर के संग स्वर्ग में रहेंगे। परन्तु अनन्त जीवन पाने का अर्थ यह भी है कि आपके भीतर परमेश्वर का वास है। भ्रमाण्ड के परमेश्वर का अधिकार आपके ऊपर है तथा वह तब तक अपने कार्यो को आपके जीवन में करता रहेगा जब तक उसके कार्यो की समाप्ति नहीं होती। (फिलिप्पियों 1:6)

> और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। (फिलिप्पियो 1:6)

नोट

याद रखें:

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गई।
(2 कुरिन्थियों 5:17)।

मूल सिद्धान्त:

जब हम अपने पापों से पश्चाताप् करते हैं और हमारे विश्वास की स्थापना के लिए क्रूस पर यीशु मसीह ने अपना कार्य समाप्त किया, परमेश्वर ने हमारे पापों को माफ किया तथा अपने परिवार में हमारा स्वागत किया है। हम नए बन गए; सम्पूर्ण रूप से नव जीवन।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या आपके पास मुक्ति की व्यक्तिगत निश्चयता है?
- आपकी मुक्ति की आशा के कारण हैं?
- एक पाठ बनाए जिसमें आप दूसरों से यह सच्चाईयां बाँट सकें।

जीवन पुस्तक
पहला चरण

पढ़ेः 2 कुरिन्थियों 5:14,15

डिटरिच बोन होफर लिखते हैं, "जब मसीह किसी व्यक्ति को बुलाते है, वह आमन्त्रित करता है कि आए और मरे।" पौलूस प्रेरित लिखता है, "मै मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मै शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।" (गलतियों 2:20)

यह मसीही चेलेपन का अरक है - अपने सम्पूर्ण जीवन को देते हुए यीशु मसीह के पीछे चलना है। यीशु के पीछे चलने से, यह बिल्कुल स्पष्ट तथा पहला कदम है जो प्रत्येक विश्वासी को लेना चाहिए।

1. मसीह में अपने विश्वास को सभा में स्वीकारना है

जीवन के विशेष निर्णयों को अधिकतर सभा में सुनाया जाता है। जब कभी भी यीशु ने किसी व्यक्ति विशेष को अपने पीछे आने को कहा, उसने उन्हें समूह में से बुलाया। सभा में यीशु के नाम को पुकार कर, आप संसार को बताते हैं कि आप यीशु को अपने जीवन में पाकर लज्जित नहीं हैं। समूह में स्वीकार करने से आपके समर्पण पर मोहर लग जाती है। (पढ़े मत्ती 10:32; रोमियो 10:9,10)

2. डुबकी के बपतिस्में के द्वारा मसीह के पीछे चलना

आपका बपतिस्मा विश्वास का सामूहिक कथन है। आप इस बात की घोषणा कर रहे हैं कि आपने अपने पुराने रास्तों को दफन कर दिया तथा मसीही जीवन में नई चाल को जन्म दिया। आपका बपतिस्मा, आपके परिवार तथा मित्रों के साथ मसीह यीशु में विश्वास को बाँटने के लिए भी अदभुत् मौका है। (पढ़े रोमियो 6:4)

3 पवित्र आत्मा से भरने तथा नियन्त्रण की माँग करें। पवित्र आत्मा सहायक है जो यीशु ने अपने चेलों में लाने का वायदा किया। मसीही होते हुए पवित्र आत्मा हम में वास करता है, कार्यो को करने के लिए हमें सामर्थ देता है। परमेश्वर को प्रसन्न करने के तरीकों से बोलता एवम् विचार करता है। पवित्र आत्मा के फल, इनाम

जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मै भी अपने स्वर्गीय पिता के साहमने मान लूँगा।
मत्ती 10:32

तथा सामर्थ आपके लिए उपलब्ध है। (पढ़े इफिसियों 5:18)

4. प्रत्येक उस अपराध से मुड़ें जिसे आप जानते हैं। परमेश्वर की सार्म्थ जो हमारे भीतर रहती है उसके द्वारा हम पवित्र जीवन जी सकते हैं। जब कभी भी परमेश्वर हम पर कोई भी शब्द, व्यवहार या क्रिया प्रगट करता है जो उसे निरादर देता है हमें अपने पापों को मानकर पूर्ण रूप से पश्चाताप् करना चाहिए। जैसे हम उसकी रौशनी में चलते हैं, यीशु के साथ हमारी संगति मजबूत बन जाती है तथा हम उसके निकट आ जाते हैं। (पढ़े 1 यूहन्ना 1:7-9)

5. मसीही केन्द्र स्थानीय कलीसीया में हिस्सा लें दूसरे विश्वासियों की संगति से आपकी मसीहत में सजीवता आ जाती है। संगति तथा मिलकर अराधना से हम सार्म्थी हो जाते हैं तथा हम दूसरों को भी सार्म्थ देते हैं। मसीह में विश्वास योग्य बनने तथा कलीसीया को आदर देने से आपको मसीह तथा उसके लोगों को आदर देने का मौका मिलता है। (पढ़े इब्रानियों 10:24,25)

6. लोगों की सेवा करके मसीह की सेवा करना मसीह के चेले होते हुए, हम दूसरों की सेवा के लिए हैं। अपनी जरूरतों पर ध्यान देने की बजाए, आपका ध्यान परमेश्वर तथा उन लोगों पर लगे जिनके पास आप उसके नाम से सेवकाई के लिए जाते हैं। स्वयं को परमेश्वर तथा दूसरों के लिए देने से, आप मसीह यीशु को आदर देंगे। (पढ़े मरकुस 10:44,45)

7. बाईबल के द्वारा परमेश्वर के साहमने खुलो एक भी दिन को परमेश्वर के वचन को पढ़ने तथा मनन करने के बिना न जाने दे। बाईबल आपके लिए परमेश्वर का प्रेम पत्र है। इसके पन्नो के दौरान परमेश्वर आप से बात करता है - अगुवाई, चेतावनी, सही तथा अपने प्रेम को प्रगट करता है। अपने आस पास देखें जो कुछ भी आप देखते हैं नाश्वान है - बजाए परमेश्वर के वचन के। परमेश्वर का वचन सदा के लिए है। (पढ़े यशायाह 40:8; भजन 119:105)

8. अपने प्रार्थना के जीवन को बढ़ाएं: पृथ्वी पर इस से बड़ा कोई अवसर नहीं कि आप परमेश्वर से संगति करें। यीशु के लहू के द्वारा, हम किसी भी समय, किसी भी स्थान पर सीधा वार्तालाप कर सकते हैं। आज ही से आप इसका आरम्भ यीशु की सिखाई गई प्रार्थना के द्वारा कर सकते हैं जो मत्ती 6:9-13 में है। जब आप प्रार्थना करते हैं, प्रार्थना के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें। प्रार्थना के द्वारा आप संसार को बदलने वाले बन सकते हैं। (पढ़े मरकुस 11:24; इब्रानियो 10:19-23)

9. दूसरों को यीशु के बारे में परिचित करें यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करना क्या ही सौभाग्य की बात है। संसार में करोड़ों लोग परमेश्वर को जानने के लिए भूखे हैं। वे मसीह को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं - लेकिन तभी संभव है यदि कोई उन्हें रास्ता दिखाए आज ही इस सौभाग्य को लें कि मसीह के प्यार तथा उसके प्रति आपके विश्वास को दूसरों से बाँटें। किसी दूसरे से यीशु के बारे में परिचय से एक महान् आनन्द मिलता है। (पढ़े: प्रेरितो के काम 1:8)

10. यीशु के वादों पर विश्वास रखें परमेश्वर खुश होता है जब हम विश्वास में रहते हैं तथा जो वह कहता है उस पर भरोसा रखते हैं। परमेश्वर ने हमें उसकी उपस्थिति का वादा दिया है। (इब्रानियो 13:5) उसने अपने उद्देशय का वादा दिया है। (पढ़े रोमियो 8:28,29) उसने अपनी सार्म्थ दी है। (पढ़े 1 कुरिन्थियो 10:13) विश्वास के व्यक्ति बने तथा आपके लिए परमेश्वर के वादों पर भरोसा रखें। (पढ़े 2 कुरिन्थियो 5:7)

याद करें:

पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युमानुयुग होती रहे। आमीन। (2 पतरस 3:18)

मूल सिद्धान्त:

अगुवापन वह साहस है जो यीशु मसीह के प्रभुत्व तथा पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में रहना है तथा दूसरों को यीशु के पीछे आने के लिए उत्तेजित करना है।

आपका प्रतिउत्तर:

- मसीह के साथ आपके सफर में क्या आपने यह दस महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं?
- क्या आप लोगों के छोटे समूह की अगुवाई कर रहे हैं, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस की अगुवाई की?आपका तीमुथियुस कौन है?
- इस क्रिया की योजना बनाए ताकि यह कदम दूसरों से बाँटे जाएं।

नोट: इस रूपरेखा का विस्तार डेविड छिबले की पुस्तक, "अब यह कि आप उसके है" में मिलेगा। अधिक जानकारी के लिए आप ग्लोबल एडवांस से उसकी वैब साइट पर मिल सकते है, www.globaladvance.org.

नोट

जीवन पुस्तक

आश्चर्यजनक अनुग्रह

पढ़ेः यूहन्ना 1:14-17

दो विशेष सच्चाईयां हैं जो मसीहत को संसार के सभी धर्मो से अलग करती हैः यीशु मसीह का पुनुरूत्थान तथा परमेश्वर का अनुग्रह। अधिकतंर दूसरे बड़े धर्मो में मनुष्य स्वयं परमेश्वर या देवी देवताओं की ओर जाते हैं कि वह उन्हें स्वीकार करें। मसीहत में परमेश्वर, विश्वास के द्वारा स्वयं अपनी धार्मिकता को देता है। यही है जिसे बाईबल में आरोपित धार्मिकता कहा जाता है। (पढ़े रोमियो 4:19-25)

मनुष्य द्वारा बनाए गए धर्म उनकी अपनी करो और न करो से शुरू होता है, परन्तु मसीहत जहाँ से शुरू होती है समाप्त यां खत्म। क्रूस पर यीशु चिल्लाए, "यह समाप्त हुआ।" (यूहन्ना 19:30)। आपके उद्धार की कीमत सम्पूर्ण रूप से चुकाई गई।

अनुग्रह दया से कहीं बढ़कर है। परमेश्वर का अनुग्रह हमारी ओर उसकी सेवा का एक हिस्सा है। परमेश्वर का अनुग्रह उसका अधिकार है कि वह जीवन जीए जो उसे प्रसन्नता देता है। विश्वास से हम परमेश्वर के अनुग्रह को पाते है, यहां तक कि हमारा विश्वास भी उसी का दिया हुआ उपहार है।

अनुग्रह की बहुत सी बातें हैं जो बाईबल में दी गई हैं वे निम्नलिखित हैं:

1. **बचाव का अनुग्रह** चारल्स सर्पजन सही थे जब उन्होनें इस बात को देखा कि, "मनुष्य अपने उद्धार के लिए कुछ भी नहीं से बहुत कुछ जोड़ लेता है।" यह परमेश्वर है जिसने हमें अनुग्रह के द्वारा बताया, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने, आपके प्रति अपने महान् प्यार के कारण, आपको बचाया जब

आपने अपने भरोसे को मसीह पर रखा, जबकि आप उसकी कृप्या के लायक नहीं थे। जब हम यीशु मसीह के हमारे पापों के लिए दी गई कीमत के पूर्ण कार्य को याद करते है और उस पर भरोसा रखते हैं, परमेश्वर अपनी आरोपित धार्मिकता विश्वास के द्वारा हमें देता है। (पढ़े इफिसियों 2:8,9; तीतुस 3:5)

तो उसने हमारा उद्धार किया:और यह धर्म के कामों केकारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दयाके अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ है।

तीतुस 3:5

2. सुरक्षित अनुग्रह

उसके अनुग्रह के कारण परमेश्वर के साथ हमारा अनुग्रह सुरक्षित है कीमत में और क्या जोड़ा जा सकता है कि उसने पहले ही आप के अपराधों के लिए मसीह यीशु का लहू बहा दिया?आपको स्वीकारणा है जैसे पौलुस ने किया कि यीशु सम्पूर्ण रूप से सम्भाल स का जो उसने अपने लहू से खरीदा था। (पढ़े 2 तीमुथियुस 1:12) हमारे पापों की सम्पूर्ण कीमत यीशु के लहू बहाए जाने से पहले ही दे दी गई है। (पढ़े रोमियों 5:1,2)

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहेगी। आमीन।
2 कुरिन्थियों 13:14

3. पवित्र अनुग्रह (पढ़े तीतुस 2:11:14)

हमारे जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभाव को देखें। परमेश्वर का अनुग्रह हमें सिखाता है कि (1) अपवित्रता या संसारिक अभिलाषाओं को 'न' कहना, (2) ईश्वरता को 'हाँ' कहना, (3) यीशु के पुणे आगमन की अपेक्षा करना।

4. कर्तव्यों का अनुग्रह (पढ़े 2 कुरिन्थियों 8:9 इफिसियों 3:1,2) परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के नाम में हमें दूसरों की सेवा करना सिखाता है।

5. चकित करने का अनुग्रह परमेश्वर अपनी सन्तान होते हुए आशीषित करना चाहता है। वास्तव में वह अनुग्रह के ऊपर अनुग्रह को भरता है। वह हमें कभी न सोची गई आशीषों को देकर हैरान करता है तथा हर परिस्थिति में उसको आदर देना सिखाता है। (पढ़े यूहन्ना 1:16)

6. सामर्थी अनुग्रह प्रेरितों के काम के चौथे अध्याय में, कलीसीया पहली बार सताव का अनुभव कर रही थी। उनका प्रतिउत्तर यह था कि वे प्रार्थना करते, परमेश्वर की ताकत की माँग करते तथा इस बात को साबित करना चाहते थे कि यीशु जिन्दा है। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, अपनी अदभुत् सार्म्थ तथा महान् अनुग्रह देते हुए। (पढ़े प्रेरितों के काम 4:33)

7. प्रयाप्त अनुग्रह पौलुस अपनी कमज़ोरी को समझ गया। परन्तु उसने अपनी कमज़ोरी को मसीह की जीत में बदल दिया, यीशु के लिए जो वह था उसको बदल डाला। यह बात मान्यता नहीं रखती कि आपकी परिस्थिति कितनी गम्भीर है, परमेश्वर का अनुग्रह आपके लिए प्रयाप्त है (पढ़े 2 कुरिन्थियों 12:9,10) परमेश्वर के वचन से आज इस उद्घोषणा को पाएं "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।" (पढ़े 2 कुरिन्थियों 13:14)

याद करें:

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है और न कि कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे क्योंकि हम उसके बनाए हुए है; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सूजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया। (इफिसियों 2:8-10)

मूल सिद्धान्त:

अनुग्रह परमेश्वर की अदभुत् कृप्या है तथा यीशु मसीह की योग्यता हमारी ओर।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या उद्धार के लिए आप अपने अच्छे कार्यों पर विश्वास करते है या आप सलीब पर मसीह के समाप्त किए गए कार्यों पर विश्वास करते है?
- क्या कोई ऐसा स्थान है जिसमें आप स्वयं को कमज़ोर पाते हैं? पढ़े पहला कुरिन्थियो 12:9,10 तथा परमेश्वर के अनुग्रह पर ध्यान दें।
- परमेश्वर के अनुग्रह के ऊपर एक सन्देश तैयार करें तथा इन सच्चाईयों को दूसरों से बांटे।

नोट

जीवन पुस्तक

विश्वास की पाँच घोषणाएं

पढ़ेः यर्मयाह 1:4-19

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को अपनी सेवकाई के लिए बुलाता है, वह उसको सेवकाई के योग्य बनाता है। आप शायद उस कार्य के लिए शिक्षित न हो, वैसा जैसे कि यर्मयाह ने किया। एक बार परमेश्वर ने यर्मयाह को बुलाया; वह उसे बहाने बनाने नहीं दिया। परमेश्वर ने यर्मयाह को कार्य न पूरा करने के लिए डाँटा। फिर परमेश्वर ने उसे कहा फिर कभी उस कार्य के लिए जिसके लिए तुझे बुलाया गया है न नहीं कहना।

यर्मयाह की तरह, तुझे अपनी पीढ़ीयों को परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए बुलाया गया है। वह तुम्हे तुम्हारे कार्य के योग्य बनाएगा। सेवकाई के लिए यर्मयाह की बुलाहट से पाँच घोषणाएं उठती है। विश्वास का प्रत्येक कार्य आपका परमेश्वर पर विश्वास पर निर्भर करता है। आपकी उपस्थिति उसकी योग्यता में बदल जाती है। अब आप कह सकते हैं, "जो मुझे सार्म्थ देता है उसमें मै सब कुछ कर सकता हूँ। (फिलिप्पियो 4:13) साहसी होकर इन पाँच वाक्यों को घोषित कर दें। तब तक ज़ोर से कहते रहते जब तक आप हृदय की गहराईयों मे विश्वास नहीं करते। फिर परमेश्वर में आपकी पीढ़ी पर प्रभाव डालने के लिए विश्वास का कदम उठाएं।

विश्वास की पहली घोषणाः "मैं मसीह के राज्य के लिए महत्वपूर्ण हूँ। इसलिए मैं एक राजदूत के सम्मान कार्य करूँगा। गर्भ में रचने से पहले ही मैने तुझ पर चित लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैने तुझे अभिषेक किया, मैने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता बनाया" (यर्मयाह 1:5)। आपके जन्म से पूर्व ही, परमेश्वर आपको जानता था तथा अपनी बुलाहट के लिए आपको अलग कर दिया। आप मसीह के राजदूत होते हुए अपनी बुलाहट की सच्चाई में चलो।
(पढ़े 2 कुरिन्थियों 5:20; फिलिप्पियों 1:17)

विश्वास की दूसरी घोषणाः "परमेश्वर का वचन मेरे मुख में है। इसलिए मै परमेश्वर की वाणी के रूप में बोलूगाँ।" "देख मैने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए है" (यर्मयाह 1:9)। आप अधिकार से प्रचार करे, जानते हुए की वह अपना सन्देश आपके द्वारा सुना रहा है। जो वचन परमेश्वर ने

जो मुझे सामर्थ देता है
उसमें मैं सब कुछ
कर सकता हूँ
फिलिप्पियों 4:13

आपको दिया उसे लोगों तक पहुँचाए। जब आप प्रचार करते है, आशा रखें कि वह कार्य करे। (पढ़े 1 पतरस 4:11)

विश्वास की तीसरी घोषणा: परमेश्वर के कार्य मेरे कार्य है। इसलिए, मै परिश्रमी कार्यकर्ता बनूँगा। परमेश्वर छोटे भविष्यवक्ता को भेजता है "उन्हे गिराने और ढा देने के लिए, नाश करने और काट डालने के लिये, या उन्हे बनाने और रोपने के लिए।" (यर्मयाह 1:10) दूसरे शब्दों में परमेश्वर यर्मयाह को कार्य सौप देता हैं। आप संसार के सबसे महत्वपूर्ण कार्य मे जुटे है। इसलिए कोई भी किसान अपने खेत में कठिन परिश्रम क्यों करता है जबकि आप आपकी आत्मिक खेती में ऐसा नही कर पात? क्यों कोई भी विद्यार्थी आपसे अधिक पड़ाई करता है? क्यों कोई भी व्यपारी किसी इमारत को बनाने के लिए अधिक रूचि दिखाता है जबकि आप परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए नही कर पाते?

यीशु कभी जल्दबाजी में नही थे, किन्तु वह कभी विलम्ब भी नही किए। उसने एक घड़ी भी बर्बाद न की। एक प्रसिद्व पासवान को एक बार उसकी सेवकाई की सफलता के रहस्य को पूछा गया। उसने उत्तर दिया, "परमेश्वर से प्रेम करे लोगों से प्रेम करो अधिक प्रार्थना करे तथा सख्त मेहनत करें।" यीशु हमेशा उपस्थित एवमं आवश्यक है। उसी प्रकार से हमें भी करना है। (पढ़े भजन 10:12; यूहन्ना 9:4; इफिसियों 5:16)

विश्वास की चौथी घोषणा: "प्रकाशन मेरी शिक्षा है इसलिए मै प्रार्थना करूँगा" परमेश्वर ने यर्मयाह को कहा; "आप क्या देखते है?" (यर्मयाह 1:11)। आपका दर्शन क्या है आपका प्रकाशन क्या है?प्रकाशन परमेश्वर की सच्चाई है जो वह आपके ऊपर प्राकशित करना चाहता है। शिक्षा महत्वपूर्ण है। प्रकाशन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। (पढ़े लूका 18:1) जब हम उसकी उपस्थिति में होते है तो वह हमें अपना प्रकाशन देता है।

विश्वास की पाँचवी घोषणा: "मुझे काटने के लिए बोना है इस लिए मै विश्वास से बोऊंगा" अब आपके लिए समय है कि " खड़ें हो जाए एवमं बोले" (यर्मयाह 1:17)। एक किसान बीज को कटनी से कई समय पहले बोता है। परमेश्वर का कार्य यह है कि: बोना फिर काटना। देना, फिर पाना। (पढ़े लूका 6:38; गलतियों 6:9 प्रेरितों के काम 20:35)

याद करें:

गर्भ में रचने से पहिले ही मैंने तुझ पर चित लगाया, और उत्पन्न होने से पहिले ही मैंने तुझे अभिषेक किया; मैंने तुझे जातियों का भविष्यवक्ता ठहराया। (यर्मयाह 1:5)

मूल सिद्धान्त:

आप परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए है तथा सन्देशवाहक जो उसके वचन को आपके देश तथा दूसरे देशों तक पहुँचा सके। परमेश्वर ने आपके जन्म से पहिले ही आपको बुलाहट दिया है।,

आपका प्रतिउत्तर:

- इन घोषणाओं को सप्ताह के प्रत्येक दिन में दोहराएं।
- परमेश्वर की बुलाहट जो यर्मयाह के लिए थी उसका सन्देश तैयार करो तथा उसे दूसरो से बाँटो तथा साथ ही परमेश्वर की बुलाहट को हमारे दिन के सन्देशवाहकों के लिए।

नोट

सप्ताह 6

जीवन पुस्तक

दीर्घ आयु की फलदायी सेवकाई के लिए सुनिश्चितता

पढ़ें: भजन 78:72, 2 पतरस 1:2-11

यदि मैं आपके लिए परमेश्वर का दास होते हुए तथा यीशु मसीह का सन्देशवाहक होते एक प्रार्थना करूँ, तो वह यह कि परमेश्वर आपको फलदायी, तथा आपके जीवन भर मसीह को आदर देने की सेवकाई की प्रार्थना करूँगा। बाईबल उन विशेषताओं को बताती है कि हम मसीह की सेवा में प्रभाव डालने के लिए सुनिश्चित है। इन विशेषतायों से बढकर इस बात से भी सुनिश्चित है कि यीशु के प्रति हमारे पाप में कभी गिरावट नही आएगी। परमेश्वर हमें वह सब वस्तुए देता है "जिनकी हमारी जिन्दगी में आवश्यक्ता है तथा पवित्रताई, उसी के ज्ञान के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा तथा अच्छाई से बुलाया है" (2 पतरस 1:3) पवित्र आत्मा पर निर्भरकरें कि वह आपको बदले तथा प्रत्येक दिन में उसकी चरित्र की विशेषताओं को स्वयं में डालने से उसकी सहायता करें।

1. **विश्वास।** "अपने विश्वास में जोड़े ....." (2 पतरस 1:5)। विश्वास चरित्र के लिए एक चट्टान है क्योंकि विश्वास साधरण रूप से परमेश्वर तथा वादों में भरोसा करना है। अपने दिमाग में अविश्वास को आने न दे।

2. **ईमानदारी (या सच्चाई)।** "अपने विश्वास में ईमानदारी रखें" (2 पतरस 1:5)। ईमानदारी शब्द का अर्थ है नैतिक अच्छाई। सुसमाचार के सेवक उन बुराईयों का शिकार न बने जैसे पैसा, लिंग तथा ताकत (1 तीमथियुस 3:2.7 में आत्मिक बढ़ौतरी की शिक्षाए पढ़े।) प्रत्येक आपराध का दृढता से विरोध करें तथा सम्पूर्ण हृदय से यीशु की अराधना करें। सच्चाई का व्यक्ति सम्पूर्ण मनुष्य है। इसमें कोई भिन्नता नही कि वह लोगों के मध्य तथा गुप्त स्थान में क्या प्रदर्शित करता है।

3. **ज्ञान।** ईमानदारी में ज्ञान जोड़ो (1 पतरस 1:5) यीशु ने कहाँ हम अपने सम्पूर्ण मन से परमेश्वर से प्रेम करें। (पढ़े मती 22:37) परमेश्वर चाहता है कि आप शरीर मन एवम् आत्मा में बढ़ते जाएं। निरन्तर पढ़ते, प्रश्नों के उत्तर देते, तथा ज्ञान और बुद्वि की बातें करते रहें। (पढ़े कुलस्सियों 2:2,3)

क्योंकि उसकी ईश्वरीय सार्म्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।

2 पतरस 1:3

और आशा से लज्जा नहीं होती क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। रोमियों 5:5

4. आत्म निश्न्त्रण। "ज्ञान के लिए आत्म नियन्त्रण" (2 पतरस 1:6)। आज बहुत से लोग क्रोध से जीत पाएं हैं। नियन्त्रण से बाहर का क्रोध सुसमाचार की सेवकाई के लिए स्वीकार नही किया जा सकता। (पढ़े 2 तीमुथियुस 2:24) पवित्र आत्मा की सार्म्थ से हम अपनी भावनाओं तथा क्रियाओं को नियन्त्रण में रखें तथा बुरी सोच एवम् बुरी क्रियाओं का हिस्सा न बने। साथ ही हमारी विधिसंगत इच्छा यही हो कि हम आत्मा के नियन्त्रण में रहें। सच्ची विनीतता, सिद्धरूप में यीशु के द्वारा देखी गई, नियन्त्रण के कारण वह सार्म्थी रही।

5. अध्यवसाय। "आत्म नियनत्रण के लिए अध्यवयास" (2 पतरस 1:6) निराश होने कि लिए यह हमेशा बहुत जल्दी होतो है। कोई इन शब्दों को पढ़ रहा था जो सेवकाई के लिए बहुत दुखित कर देने वाले थे। परमेश्वर की वाणी आज आप के पास आती है। हम भले काम करने में हियाव ने छोड़े, क्योंकि यदि हम ढ़ीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे" (गलतियों 6:9)। कोई बात नही कि आपकी परिस्थितियां कैसी है कभी, कभी, कभी भी अपने विश्वास को न खोएं। रेस को जीतने के लिए, आपके रेस में रहने की आवश्यक्ता है। (पढ़े इब्रानियों 12:1-7)

6. ईश्वरताई। "अध्यवसाय के लिए ईश्वरताई" (2 पतरस 1:6) ईश्वरताई स्वयं की धार्मिकता नही है, सच्चाई यह है कि यह बिल्कुल भिन्न है। ईश्वरता का अर्थ यह है कि परमेश्वर के जीवन को स्वय में जोतना, उसकी आत्मा की सार्म्थ पर ध्यान देना आप "बदले हुए जीवन" का अनभुव कर सकते है उन सभी को बदलना जो मसीह यीशु के नही है। जैसे आप उस में बढ़ते है, आप मसीह के स्वरूप पर ढलते जाएंगे। (पढ़े रोमियों 8:28, 29)।

7. भाईचारे की दया। "ईश्वरता के लिए भाईचारे की दया" (2 पतरस 1:7)। परमेश्वर उस बुलाहट की विशेषता को बताता है कि लोग दया-पाने के लिए तरस रहे है। आपका दया का स्पर्ष, उत्साह से भरा वचन, जरूरत के समय आपके द्वारा की गई प्रार्थना-परमेश्वर की नजरों मे यह साधरण कार्य आज आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण हो सकते है।संसार में लोग स्वंय के लिए कुछ ढूंढ रहे हैं, आपकी दया उनके द्वारा मसीह के लिए एक बड़ी गवाही बन जाएगी

8. प्रेम "तथा भाईचारे की दया के लिए प्रेम" (2 पतरस 1:7) सम्पूर्ण सेवकाई के लिए सबसे बड़ा दबाव शायद प्रेम है (पढ़े 2 कुरिन्थियों 5:14,15; गलतीयो

5:6)। सभी मसीही अच्छाईयों में सबसे महत्वपूर्ण प्रेम है। मसीह का प्रेम आत्मा को फलों का वह हिस्सा है जो परमेश्वर हम में डालता है जब हम उस पर भरोसा रखते हैं ... "परमेश्वर का प्रेम हमें दी गई पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अन्दर भरा है (रोमियों 5:5)"। (गलतियों 5:22,23)

याद करें :

शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोश सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा। (1 थिस्सलूनीकिया 5:23,24)

मूल सिद्धान्त:

प्रत्येक मसीही अगुवे अपने चरित्र को बढ़ाने का प्रयास करें। परमेश्वर ने हमें वह सब दिया जिसकी हमें जरूरत है तथा मसीह में हमारे बढ़ रहे रिश्ते में ईश्वरता। (पढ़े 2 पतरस 1:3,4)

आपका प्रतिउत्तर:

- अभी इसी वक्त, एक समय के लिए रूकें तथा इन आठ चरित्रों को आपके जीवन में बोएं। पवित्र आत्मा में बने रहें उसे अपने फल आपमें डालने की अनुमति दें।
- इस सम्ताह में हर दिन इस पद्यांश को पढ़ें, परमेश्वर से कहें कि वह इन विशेषताओं को आप में डाले।

नोट

जीवन पुस्तक

परमेश्वर के ग्रहणयोग्य

पढ़े 2 तीमुथियुस 2:15

जिम एलीयट एक शहीद मिशनरी था। उसके साथ चार बहादुर मिशनरी थे, एलीयट ने अपने जीवन को मसीह के लिए दे दिया ताकि अकुयादर गोत्र को सुसमाचार सुना सके। जब जिम एलीयट केवल 20 वर्ष का था, कालेज से उसके सनातक के कुछ ही पहले, उसने टिप्पणी की कि एक ही "डिगरी" है जो हमारे लिए मान्यता रखती है वह है ए.यू.जी - Approved unto God यानी परमेश्वर की स्वीकृति। इस "डिगरी" को पाने के लिए क्या "अध्ययन" करने पड़ते है विशेषरूप से परमेश्वर की स्वीकृति पाने के लिए सेवकाई में क्या विषय आवश्यक है "ए.यू.जी" पाने के लिए कुछ "विषय" यहाँ है।

1. प्रार्थना

क्या आप मसीह में अपनी सहभागिता में बढ़ रहे हैं?चारलस सर्पजन ने अपने जवान पासवानों से जिन्हें वह प्रशिक्षित कर रहा था यह सिखाया कि सबसे महान् बात जो हमें सीखनी है वह यह है कि अपनी "दया की कुर्सी से सुपरिचित होना।" यीशु ने सिखाया कि हम सदैव प्रार्थना का वातावरण बनाए रखें, तथा वह प्रार्थना निराशा के प्रति सुरक्षा कवच तथा हमारी सेवकाई के लिए निःशेषण है। (पढ़े लूका 18:1) आपकी प्रार्थना के जीवन को सार्म्थी बनाने के लिए कुछ छोटे विषय है।

- सर्म्पन के साथ प्रार्थना करें: चेलों के पास प्रार्थना का समय नियुक्त था तथा हमारे पास भी प्रार्थना का समय नियुक्त होना चाहिए। (पढ़े प्रेरितों के काम 3:1)
- प्रार्थना में उत्सुकता: गोरडम लिन्डसे विश्वास करते हैं कि "प्रत्येक मसीही हर दिन कम से कम एक प्रबल प्रार्थना करे।" (पढ़े याकूब 5:16; मत्ती 11:12)

फिर उसने इस के विषय कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा।
लूका 18:1

- विशिष्ट रूप से प्रार्थना करें। (पढ़े मत्ती 16:9)
- दूसरे विश्वासीयों के साथ मिलकर प्रार्थना करें। (पढ़े प्रेरितों के काम 4:24)
- प्रार्थना में डटे रहें, जब तक उत्तर न पांए (पढ़े लूका 11:9)
- उत्साह से प्रार्थना करें। (इब्रानियों 4:16)
- परमेश्वर का उत्तर पाने की आशा में प्रार्थना करें। (पढ़े 1 यूहन्ना 5:14,15)

2. **दया** प्रभावकारी सेवकाई के लिए प्रेम एक उछाल तख्ता है। मुक्ति फौज के एक सेवक ने एक बार विलियम बूथ को एक सन्देश भेजा, इस वाक्य को लिखते हुए कि सेवकाई में उसका हर एक प्रयास असफल है। जनरल बूथ ने एक छोटा किन्तु मजबूत उत्तर दिया: "आँसू बहाने की कोशिश करें।" (पढ़े भजन सहिता 126: 5, 6; गलतियों 5:6)

3. **दर्शन** मैने किसी भी ऐसे व्यक्ति को नही देखा जो छोटे दर्शन के द्वारा सेवकाई में प्रवेश कर रहा हो। परन्तु कुछ लोग छोटे दर्शन के कारण सेवकाई से बाहर चले जाना चाहते है तथा यह एक चकित कर देने की बात है। शैतान ने दुर्भाग्य का हथौड़ा उठा लिया तथा निराशा की आत्मा उनकी और भेजी ताकि उनकी आशाएं तथा स्वप्पन खत्म कर दिए जाए। तथा अचानक वे महसूस करते है कि उनका दर्शन परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि मुनष्य की ओर से था। मै आपसे निवेदन करता हूँ: वह दर्शन जो परमेश्वर ने आपको दिया है उसे किसी भी कीमत में बचा कर रखें तथा याद रखें, कि हमारा सर्व प्रथम दर्शन उसके लिए है, तथा फिर उसकी सेवकाई का दर्शन। (पढ़े नीतिवचन 29:18)

4. **विश्वास** विलियम कैरी, एक महान् मिशनरी जो भारत में आए थे, कहते है, "परमेश्वर के लिए अदभुत्-कार्य करो तथा परमेश्वर से अदभुत कार्यो की अपेक्षा करें"। सभी मसीही अगुवे महान् विश्वास को रखते हैं। विश्वास एक बाहुबल के समान है: यदि आप विश्वास का अभ्यास करते है तो यह बढ़ेगा। यदि आप अपने विश्वास को फैलाएंगे नहीं, तो आपका विश्वास क्षीण एवम् कमजोर हो जाएगा।(इब्रानियो पढ़े 11:6)

5. **नम्रता** एक मसीही विद्वान ने एक बार कहा, "यदि आपको इब्रानी, कनानी एवम् यूनानी भाषाएं आती हैं तो, यीशु के जल्लादों के समान न बनिए तथा उसके सर पर काँटों की तरह न लगाईए। बल्कि यूनानी, कनानी एवम् इब्रानी भाषाओं से ज्ञान पाकर उसके कदमों में रख दें।" स्वयं को रोज़ाना उसके सामने विनम्र करना हमारे जीवन के प्राणों के लिए आवश्यक है। (1 पतरस 5: 5, 6)

6. **कार्य** यहाँ सेवकाई में एक महत्वपूर्ण सच्चाई है: कार्य की कोई भी राशी आपके पवित्र आत्मा के अभिषिक्त की कमी की पूर्ति नहीं कर सकती। पर यह भी सच है कि कोई भी राशी सख्त मेहनत की क्षति पूरी नहीं कर सकती। एक प्रसिद्धमसीही ने एक बार मुझ से कहा, "पवित्र आत्मा प्रतीक नहीं है।" वह उत्साह उत्पन्न करता है, परन्तु परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ करने के लिए हमें स्वेदना उत्पन्न करनी है। (पढ़े 2 कुरिन्थियों 6:4-10; 12:15)

याद करे:

अपने आप को परमेश्वर के ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न करो, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता है (2 तीमुथियुस 2:15)

मूल सिद्धान्त:

हमें परमेंश्वर के सामने जाने के लिए परिश्रमी होना चाहिए तथा स्वयं में इन बातों को लाने से उसे प्रसन्नता एवम् आन्नद मिलेगा।

आपका प्रति उत्तर:

- क्या आपने "ए.यू.जी डिगरी" को पाने के लिए, उससे सम्बन्धित विषय पढ़े है?
- परमेश्वर से अनुमोदना पाने के विषय में एक सन्देश लिखें तथा इन सच्चाईयों को दूसरों

नोट

सप्ताह 8

जीवन पुस्तक

बुलाए गए एवम् समर्पित

पढ़ें: कुलस्सिया 4:17

मेरे लिए सबसे सम्मान एवम् आन्नद की बात, अपने पुत्र जोनाथन की अभिषेक सभा में सन्देश सुनाना था। यहाँ पर मैं अपने उत्तरदायित्व को अपने पुत्र को देता हूँ जो सुसमाचार का सेवक है। यह एक चुनौती है जो मैं तुम्हें भी देना चाहता हूँ।

1. **दर्शन को स्पष्ट रखें** बार-बार "दर्शन से पुर्णमिलन," करें, अपने हृदय में इसे ताज़ा एवम् स्पष्ट बनाए रखें। परमेश्वर की असल बुलाहट जो उसने तुम्हारे जीवन एवम् सेवकाई के लिए दी है उसमें विश्वास योग्य बने रहें। याद रहे कि आपकी बुलाहट आपका अभिषेक है। जिस कार्य के लिए आप बुलाए गए है उसके लिए परमेश्वर आपको अलौकिक अभिषेक देगा। अपनी बुलाहट में बने रहें तथा आपकी सेवकाई का अभिषेक आप पर बना रहेगा। अपनी बुलाहट की सीमायों से बढ़ कर कार्य करें तथा शायद अकेले जाने में आप खतरा महसूस करेंगे। एक अदभुत-संपरिवर्तन के लगभग 20 वर्षो तथा दमिश्क की बुलाहट के पश्चात्, पौलुस ने किसी विधर्मी राजा को गवाही दी कि वह अपने सम्पूर्ण जीवन में परमेश्वर की बुलाहट के प्रति वफादार रहा। (पढ़े प्रेरितों के काम 26:13-23)

2. **साफ चेतना को रखें** यहाँ एक वादा है-यह बहुत "बहुमूल्य" वादा तो नहीं है, किन्तु यह एक महत्वपूर्ण वादा है: सेवकाई में कोई आपको दु:ख पहुँचाने जा रहा है। बुरे शब्दों का प्रयोग आपके लिए किया जाएगा। जो आप परमेश्वर के लिए करना चाहते है लोग उसका विरोध करेंगे। लोगों के विरूद्धकड़वाहट न भरें। आपके ऊपर आने वाले धावे का प्रतिउत्तर उनका विरोध करके न दें एवम् लोगों के साथ साफ चेतना रखें। (पढ़े प्रेरितों के काम 24:16)

3. **वचन के प्रति मज़बूत समर्पन रखें** सबसे निम्न एवम् सबसे कठिन समयों में, यह परमेश्वर का वादा है कि वह आपको सम्भालेगा। विलीयम कैरी की गवाही को सुनें जो उसने भारत में सबसे कठिन समय में सुनाई: "जब मैंने इंगलैण्ड छोड़ा, भारत के लिए मेरी बुलाहट एवम् आशा बहुत मज़बूत थे; किन्तु बहुत सी समस्याओं में, यह खत्म हो जाती है, जब तक परमेश्वर के प्रति समर्पित न हों। मेरे

फिर अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना (कुलुस्सिया 4:17)

जबकि मैं सबके द्वारा भगौड़ा बनाया गया तथा सबके द्वारा सताया गया, फिर भी मेरा विश्वास, परमेश्वर की अटूट वाणी से जुड़ा रहा, इसलिए मैं प्रत्येक समस्याओं पर विजयी हुआ। परमेश्वर का कार्य जीतना है।" (जौन पाईवर के द्वारा टिप्पणी "मिशन में परमेश्वर की महानता अराधना में दिखाई देती है," सर्वोच्च संसार में, 2001-8)

और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ इफिसियों 5:18

4. पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में रहें परमेश्वर को अनुमति दें कि जिस कार्य को केवल वही पूरा कर सकता है वह उसे ही करने दें। उसमें जीना सीखें जिसे बौब पियर्स "परमेश्वर की विशालता" कहते हैं। डा. पियर्स कहते है "परमेश्वर की विशालता" एक ऐसी जगह है जो मनुष्य के लिए असम्भव है तथा जिसे परमेश्वर सम्भव बनाना चाहते है। (पढ़े इफिसियों 3:20, 21; 5:18)।

5. संघर्ष में बढ़ते रहें सेवकाई में संघर्ष अनिवार्य है क्योंकि आपको यह आज्ञा दी गई कि परमेश्वर के राज्य को प्रदर्शित करें। विश्वासयोग्य बने रहें तथा परमेश्वर आपको प्रतिफल देगा (पढ़े 1 पतरस 5: 1-4)

आज जो आपके लिए आवश्यक है वह यह है कि अपनी बुलाहट के प्रति वफादार बने रहें, प्रारम्भिक पीढ़ीयां थी जो "उत्तरदायित्व को सम्भाले" रही हैं। चारलस वैसली ने हमारे जीवन के प्रति उसकी वफादारी को एक सुन्दर भजन में लिखा है:

> एक उत्तरदायित्व जो मुझे सम्भालना है, मसीह को महिमा देने के लिए, जिसने अपने पुत्र को दिया ताकि मेरा जीवन बच जाए तथा आसमान के लिए तैयार करें। आज के लोगों की सेवा करने के लिए, मेरी बुलाहट पूरी करने के लिए, मेरी सारी सार्म्थ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए है।प्रार्थना करने के लिए मेरी मदद करो, तथा उसके ऊपर निर्भर करें, यदि मेरा विश्वासघात होता है तो मैं अपने प्रभु पर निर्भर करता। मुझे अदभुत् सम्भाल दे, ताकि मैं उसके साथ रहूँ, प्रभु तेरे दास के लिए कोई तैयारी करे।

6. कप्तान के प्रति ध्यान देते रहें इससे पहले कि यहोशू को युद्ध में परमेश्वर की सेना की अगुवाई करने का सम्मान मिलता है, उसे एक ही बार प्रत्येक बातों के लिए परमेश्वर का एक ही कप्तान बनाया-और यहोशू वह

कप्तान नहीं था। (पढ़े यहोशू 5:13-15)। कभी भी न भूलें कि उत्तराधिकारी कौन है। यह मसीह की कलीसीया है, आपकी नहीं। युद्ध उसका है आपका नहीं। जीत उसकी है, आपकी नहीं। महिमा उसकी है आपकी नहीं। सटीव फ्राय ने इस भजन को लिखा: मैं स्वर्ग के कप्तान की ओर आत्मसमर्पित हूँ तथा उसके साथ मेरा यह वादा है।

7. यीशु के लिए उपयुक्त प्रेम को बनाए रखें

वर्षों की सेवकाई के बाद आप सेवकाई में कैसे विश्वासयोग्य बने रह सकें? सेवकाई में आकस्मिक बनने के लिए आप क्या करेंगे। सबसे उत्तम उत्तर जो मैं आपको दे सकता हूँ हर दिन यीशु के ताज़े प्रेम में बढ़े। जो प्रेम अभी है उसे और बढ़ाएं तथा आज रात्रि से बढ़ कर कल सुबह का प्रेम और बढ़ने दे।

अन्त में,
यीशु के निकट रहें,
आपकी पत्नी के निकट रहें,
सलीब के निकट रहें,
महान् आज्ञा के निकट रहें।

याद करे:

और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी थती की रखवाली कर।
(2 तीमुथियुस 1:14)

विशेष सच्चाई:

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति उससे विश्वासयोग्य बने।

आपका प्रतिउत्तर:

- पौलूस ने एक वाक्य के द्वारा अपनी बुलाहट को स्पष्ट कर दिया। क्या आप अपनी बुलाहट को स्पष्टता से बता सकते हैं, विश्वासीयों और गैर विश्वासीयों दोनों को?
- अभिषेक करने का सन्देश तैयार करें तथा इन सच्चाईयों को सेवकाई में जवान लोगों में बाँटें।

नोट

जीवन पुस्तक
उच्च पक्षपात

सप्ताह 9

पढ़े: 2 इतिहास 16:9; लूका 1:28-30

सेवकाई में इससे बढ़कर कोई बात नहीं कि परमेश्वर से पक्षापात पाना। जब सभी नवजन्म पाए हुए लोग, परमेश्वर के आम दया के नीचे रहते है तो कुछ ऐसे लोग होते है, जो परमेश्वर से विशेष "उच्च पक्षापात" को पाते है। यह वे लोग होते हैं जो अपनी पीढ़ी में परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए विशेष यन्त्र बनते है। अब, क्या आप "उच्च पक्षापात" के व्यक्ति बन सकते है?

परमेश्वर स्थिरता से पृथ्वी की जाँच कर रहा है, विशेषतायों से भरे किसी व्यक्ति को ढूढ़ने के लिए, एक ऐसा व्यक्ति "जिसका हृदय सम्पूर्ण रूप से उसके प्रति वफादार हो।" ऐसे वफादार व्यक्ति के लिए परमेश्वर महान् लम्बाई तक जाएगा, तथा उन स्त्री पुरूषों के मध्य में स्वयं को मज़बूत बनाएगा। (पढ़े 2 इतिहास 16:9)

बाईबल बताती है कि यीशु "समय पूरा होने पर" पैदा हुए। (पढ़े गलतियो 4:4) मरीयम के दिन के समान परमेश्वर प्रत्येक पीढ़ीयों, में एक ऐसे व्यक्ति को ढूंढता है जो उस समय की पीढ़ी में उस व्यक्ति को यन्त्र बनाकर अपनी योजना पूरी करता है। जब वह समय था कि परमेश्वर का पुत्र इस संसार में आए तो परमेश्वर ने सम्पूर्ण पृथ्वी की जाँच की ताकि वह एक ऐसे व्यक्ति को ढूंढे जिसके द्वारा वह प्रसन्न हो जाए तथा अपनी इच्छा को उसके द्वारा पूरा करे। उसने कुंवारी मरीयम में सही व्यक्ति को पा लिया।

मरीयम में ऐसा क्या था जिसने परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न कर दिया?क्यों छोटे से गांव की इस जवान लड़की ने इतिहास को सबसे महान् नियत कार्य दे दिया? यदि हम इस बात को ढूंढ लें कि मरीयम के हृदय में ऐसी कौन सी विशेषता थी जो उसे परमेश्वर के ध्यान में ले आई तथा उसे "उच्च पक्ष पाने का शीर्षक दे दिया", हम भी उच्च पक्ष को पा लेंगे तथा हमारे दिन में परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किए जाएं।
यह बात आप स्पष्ट रूप से जान लें कि हमें मरीयम की अराधना नहीं करनी। "परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, वरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।"

भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है।
नीतिवचन 12:2

(प्रेरितों के काम 10:35) मरीयम ने मुक्तिदाता की आवश्यक्ता को स्वयं दिखाया जब उसने यह कहा कि, "और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई" (लूका 1:47)। लेकिन फिर भी, हमें मरीयम को भी सम्मान देना है क्योंकि वह एक ऐसा उदाहरण है जिसका हृदय परमेश्वर को प्रसन्न करता है। हम भी इन विशेषतायों को अपने हृदय में जोत सकते हैं। फिर हम भी परमेश्वर से पक्ष को पाऐंगे तथा हमारे समय में उसकी योज़ना को पूरा करने का एक यन्त्र बनेंगे।

मरीयम के हृदय में ऐसी कौन सी विशेषताएं थी जो उसे परमेश्वर के सामने पक्षपात दिला सकी?

1. एक शुद्ध हृदया (पढ़े लूका 1:27)-मरीयम एक कुंवारी थी जिसकी मंगनी हो चुकी थी। वह यूसुफ नाम के एक धर्मी पुरूष से प्रेम में थी। बेशक वह यूसुफ से प्रेम करती थी, परन्तु उसने परमेश्वर से उससे भी कहीं अधिक प्रेम किया, परमेश्वर के सामने स्वयं को शुद्ध रख कर (पढ़े मत्ती 5:8)। वह परमेश्वर को सम्मान देने के बर्तन के रूप में समर्पित थी (पढ़े 2 तीम्थुयस 2:21)। आपका भूतकाल कुछ भी हो, आज के दिन से आप शुद्ध हृदय से परमेश्वर के लिए जीना शुरू कर दें तथा इस पक्ष को पा लें (पढ़े यशायह 1:18)

2. एक बहादुर हृदया मरीयम परमेश्वर के लिए महान् जोखिम उठाने जा रही थी। जब फरिश्ता मरीयम के पास घोषणा लेकर आया, वह उसके प्रभाव को समझ गई थी। फिर भी बिना भय के उसने प्रतिउत्तर दिया, देख, मैं प्रभु की दासी हूँ, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो (लूका 1:38)। मरीयम की समझ की सच्चाई उसके मंगेतर के लिए नहीं थी, किन्तु परमेश्वर के दास की ओर। वह जानती थी कि शायद यूसुफ उसे न समझे। उसने अपनी मंगनी को जोखिम में डाल दिया। उसकी सबसे बहुमूल्य वस्तु उसने परमेश्वर को देने को ठान लिया। क्या आप उस वस्तु को परमेश्वर के हाथों में देने की इच्छा रखते हो जो आपके लिए सबसे बहुमूल्य है?

3. एक विश्वास से भरा हुआ हृदय मरीयम के जीवन में विश्वास बहुत ही स्पष्ट था यहां तक कि जब इलशिबा ने उसका अभिवादन किया, तो वह उसके विश्वास के लिए आशीषित की गई। (पढ़े लूका 1:45) न केवल उसके पास महान् विश्वास ही था, उसने एक ऐसी बात पर विश्वास किया जो इतिहास में कभी घटी न थी। वहां न कभी कुंवारी के द्वारा जन्म हुआ था, परन्तु मरीयम ने कहा हाँ तथा उस पर विश्वास किया। परमेश्वर उन पुरूष एवम् स्त्रीयों की प्रतीक्षा कर रहा है कि उस बात का विश्वास करें जो कभी घटा नहीं है। इतिहास में कलीसिया ने कभी भी महान् आज्ञा को पूरा नहीं किया। एक बार फिर से परमेश्वर ऐसे व्यक्ति की तलाश में है जो हाँ कहेगा तथा उस पर विश्वास करेगा।

4. अराधना से भरा हुआ हृदय परमेश्वर के चमत्कार का प्रतिउत्तर मरीयम ने अपने हृदय एवम् मुख से उसकी अराधना करके किया। उसका सुन्दर भजन तथा अराधना जो उसने परमेश्वर के लिए किया था वह महिमा योग्य था। (पढ़े लूका 1:46-55)। गुजरे कई वर्षो से पवित्र आत्मा सम्पूर्ण संसार की कलीसीयाओं को नए आकार की अराधना करने के लिए कायल कर रहा है। होने पाए कि आपका हृदय सभी समयों में परमेश्वर की अराधना करता रहे (पढ़े भजन 96)।

5. वचन से भरा हुआ हृदय वास्तव में मरीयम का भजन वचन का एक हिस्सा था जिसे उसने व्यक्तिगत बना लिया था तथा परमेश्वर के लिए उसने अराधना का एक तोहफा दिया। मरीयम के भजन उन वचनों का हिस्सा थे शमुएल, भजन सहिता तथा यशायाह में से उसने याद किए थे। स्पष्ट रूप में मरीयम इन सभी वचनों से सुपरिचित थी जो उसे उपलब्ध थे। परमेश्वर उन लोगों को देख रहा है जो उसके वचनों को जानता तथा मानता है (पढ़े यहोशू 1:8;2 तिम्थयुस 3:16,17)।

6. आशा से भरा हुआ हृदय मरीयम अपनी पीढ़ी में सम्मान पाने की इच्छा रखती थी ताकि आने वाली पीढ़ीयों के लिए आत्मिक रास्ता निकाल सके। जबकि उसके समय के लोगों के द्वारा उसे गल्त समझा गया, लेकिन प्रत्येक सफल पीढ़ीयों ने उसे सम्मान दिया। उसने भविष्य की ओर देखा तथा जाना

आज भी परमेश्वर उनकी ताक में है जो यीशु मसीह की आज्ञा को पूरा करने के लिए अपने नाम एवम् यश को एक तरफ रखें तथा उनके लिए आत्मिक विरासत को बनाए जो हमारे बाद आऐंगे।

7. एक समर्पित हृदय अब आइये हम इस कहानी को 30 वर्ष आगे ले जाएं। यीशु अपनी सेवकाई का प्रारम्भ काना के विवाह से कर रहे थे। जब दाखरस की कमी हुई तो मरीयम ने सर्वश्रेष्ठ सन्देश सुना दिया। दासों का समूह उसके दर्शक थे तथा उसका सन्देश केवल एक वाक्य का था, "जो कुछ वह तुमसे कहे वही करना" (यूहन्ना 2:5)।

याद करें:

देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए। तूने यह काम मूर्खता से किया है, इस लिए अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा (2 इतिहास 16:9)

मूल सिद्धान्त:

परमेश्वर आज पृथ्वी का परीक्षण ले रहा है, उस व्यक्ति की तलाश में जो परमेश्वर से उच्च पक्ष को इस पीढ़ी में पा सके। जिस व्यक्ति को परमेश्वर ढूंढ रहा है जो सम्पूर्ण रूप से उसके प्रति वफादार हो तथा मरीयम के समान विशेषतायों को रखता हो।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या आप इस प्रकार की विशेषतायों को बो रहे हो ?
- स्पष्ट रूप में परमेश्वर आप से क्या करने को कहता है?"जो कुछ वह तुमसे कहे वही करना" (यूहन्ना 2:5)।

नोट

जीवन पुस्तक

परमेश्वर के अपने हृदय के अनुसार

पढ़ें: 1 शमुएल 13:14

दाऊद एक दोषरहित अगुवा था तथा साथ ही वह इस्राएल का महान् राजा भी बना। सबसे महत्वपूर्ण, बात यह है कि भयानक पाप उसके जीवन में प्रवेश किए, परन्तु फिर भी वह "परमेश्वर के हृदय के अनुसार का व्यक्ति" के रूप में याद किया जाता है। इतने बड़े दोष से भरा हुआ व्यक्ति इतने खजाने से भरा हुआ शीर्षक कैसे पा सकता है।

इसका उत्तर हमें दाऊद के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की उच्च कीमत को देखकर मिलता है। जब नथान ने दाऊद के पाप को प्रकट किया, दाऊद ने तुरन्त अपनी गलती को माना। उसका सबसे बड़ा भय परमेश्वर की घनिष्ठता को खोना था जिसका आनन्द उसने अपनी जवानी के दिनों में लिया था (पढ़े भजन सहिता 51:4)।दाऊद एक बार फिर से परमेश्वर से टूटे हुए सम्बन्ध को ढूंढने लगा। वह उन दिनों को याद करने लगा जब वह एक चरवाहा था तथा परमेश्वर के प्रेम से भरे हुए भजनों को लिखता था। यहाँ पर दाऊद की महानता की कुँजी मिलती है। उसका जीवन परमेश्वर के लिए बलिदान था। अधिकतर भजन दाऊद की उसके स्वर्गीय पिता के साथ मधुर वार्तालाप का रिकार्ड है। जैसे दाऊद अपने संसारिक पिता की भेड़ों को चराता था, उसने अपने हृदय को धन्यवाद तथा अराधना का हृदय बनाते हुए अगुवेपन के लिए तैयार किया। "फिर उसने अपने दास दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से लिया, वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे पीछे फिरने से ले आया कि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात् उसके निज भाग इस्राएल की चरवाही करे। तब उसने खरे मन से उनकी चरवाही की, और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुवाई की।" (भजन संहिता 78:70-72)।

मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंत्मेत के होम बलि नहीं चढ़ाने का।

2 शमूएल 24:24

फिर उसे अलग करके दाऊद को उन का राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।
प्रेरितों के काम 13:22

1. दाऊद का बलिदान विनम्र हृदय के साथ हुआ (पढ़े भजन 51:17)।

इस बात को ध्यान में रखें कि हम सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर करते हैं। यीशु ने अपने चेलों को याद दिलाया कि "क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यहून्ना 15:5)।

परमेश्वर की आत्मा के द्वारा मसीह की योग्यता की सार्म्थ के बिना, अनन्त कीमत के लिए हम कुछ भी निष्पन्न नहीं कर सकते। प्रभु के समक्ष टूटना सेवकाई में महान् अधिकार को लाता है। हम परमेश्वर से कोमल हृदय की माँग करें जो हमारे अपराधों तथा परमेश्वर के प्रति बलवा कर रहे लोगों को देखकर टूट सकें।

2. दाऊद का बलिदान मंहगा था। सर्वप्रथम, जब दाऊद के योद्धा पुरूष अपने जीवनों को खतरों में डालकर उसके लिए बेतलहम के कुण्ड से पानी लाए, उस कीमती पानी को स्वंय के लिए न बचाते हुए उसने परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में चढ़ा दिया। (पढ़ें 1 इतिहास 11:15-19;2 शमूएल 23:15-17)। पानी कम एवम् कीमती था, शत्रुओं के वंश से एक तोहफा। कोई शक नहीं कि दाऊद को स्वंय के निर्वाह के लिए पानी की आवश्यक्ता थी। साथ ही, उसके समर्पित लोगों से प्रेम का एक तोहफा, उसके पास पूरा अधिकार था कि उसे सम्भाले रखता। यहां पर हम दाऊद के हृदय की सुन्दरता को देखते हैं। उसके पास प्रत्येक अधिकार था कि वह अपने लिए ले सके। दाऊद ने अयोग्य बलिदान नहीं दिया; उसने परमेश्वर को वह दिया जो सचमुच में उसके लिए बहुमूल्य था तथा व्यक्तिगत रूप से उसके लिए मंहगा।

2 शमुएल 24 में फिर से यह सामर्थी रूप में लिखा गया है दाऊद ने लोगों की गनणा करते हुए पाप किया है, जो परमेश्वर की आज्ञा के विरूद्ध था। परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल सम्पूर्ण रूप से उस पर भरोसा रखे, उनकी संख्यात्मक सार्म्थ के द्वारा नहीं। दाऊद के बलवा करने के नतीजे से, इस्राएल पर न्याय आ गया।

हमेशा की तरह, जब दाऊद अपने पापों का मुकाबला किया, उसने पश्चाताप् किया। अब वह परमेश्वर के सम्मुख पापों का बलिदान देने के लिए तैयार हुआ, दाऊद का प्रतिउत्तर श्रेष्ठ था: "ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएं तुझ

से अवश्य दाम देकर लूंगा; मै अपने परमेश्वर यहोवा का सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ने का" (2 शमूएल 24:24)

दाऊद के जीवन में बहुत से धब्बे थे परन्तु फिर भी वह परमेश्वर के हृदय के अनुसार का व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है। (पढ़े प्रेरितों के काम 13:22) उसके इस महान् शीर्षक को पाने का कारण उसका परमेश्वर के लिए गहरा समर्पन तथा वह बलिदान जो उसके लिए बहुमूल्य थे। शुभसमाचार का सेवक होते हुए, आपकी बुलाहट दाऊद के राजा होने के पद से कहीं बढ़कर है। शुभ सन्देश का प्रचारक बनने का 'चुनाव' आपने नहीं किया, जैसे कोई वकील या इन्जीनियर बनने का चुनाव करता है। यदि आप सचमुच में परमेश्वर के सेवक हैं, आप ने 'चुनाव' नहीं किया परन्तु आप चुने गए हैं। इस सम्मान का प्रतिउत्तर प्रेम, आज्ञा तथा बलिदान से दें।

परमेश्वर के लिए आपके बलिदान की क्या विशेषता है?क्या आप परमेश्वर को वह दे रहे हैं जो आपके लिए किसी कीमत को रखते हैं। आपकी सफलता परमेश्वर को दिए गए बलिदान की विशेषता पर निर्भर करता है। औसत प्रचारक अपनी तैयारी में सुस्त हैं; प्रभावकारी प्रचारक परिश्रम के द्वारा अपने प्राण को प्रार्थना में तथा उसके सन्देश को पढ़ने के लिए। "परन्तु हर बात परमेश्वर के सेवकों को नाई अपने सद्गुणों को प्रगट करते है, बड़े धैर्य से, क्लेशों से दरिद्रता से, संकटों से। कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से जागते रहने से, उपवास करने से। पवित्रता से ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से"। (2 कुरिन्थियों 6:4-6)।

सबसे ऊँचा बलिदान यदि हम उसे दे सकें तो वह यह है कि छुटकारा पाए हुए लोगों को उसके सामने लाएं। पौलुस मसीह के सामने देशों को लाने की इच्छा को रखता था, जो परमेश्वर के विरूद्ध थे परन्तु अब सुसमाचार की सामर्थ के द्वारा छुड़ाए गए। उसने [देशों] के बलिदान को देखा जो परमेश्वर को स्वीकार हुए। (पढ़े रोमियो 15:16)। सेवकाई न केवल एक कार्य है परन्तु यह एक अराधना का कार्य है।

यह कितना बड़ा सम्मान है कि आप परमेश्वर के हृदय के अनुसार के व्यक्ति जाने जाएं। परन्तु आपके जीवन के ऐसे निर्धारण पर एक कीमत आपके सामने आती है, एक उच्च व्यक्तिगत कीमत। व्यक्तिगत रूप से उच्च सम्मान को पाना कि आप सुसमाचार के सेवक हैं कितनी महान् बात है इसलिए मैं आप को चुनौती देता हूँ कि आप परमेश्वर को घटिया बलिदान न दें। उसके सामने अपने कीमती बलिदान चढ़ाएं, पवित्र आत्मा से शुद्ध हो जाएं।

याद करें:

मै अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का (2 शमुएल 24:24)।

मूल सिद्धान्त:

परमेश्वर के हृदय के अनुसार का व्यक्ति होते हुए, हम ऐसे जीवन को अपना लें कि परमेश्वर को प्रसन्नता से दें जो हमारे लिए कीमती है।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या आप परमेश्वर के हृदय के अनुसार का व्यक्ति बनने के लिए समर्पित है?
- परमेश्वर के सामने बलिदान के रूप में आप कौन सी कीमती वस्तु उण्डेलें?

नोट

जीवन पुस्तक

एक अलगपन का जीवन

पढ़ें: यर्मयाह 15:19; रोमियों 1:1; गलतियों 2:20

एक प्रचारक ने हजारों लोगों के सम्मुख अपना सन्देश दिया जिनमें से बहुतेरों ने मसीह की बुलाहट का प्रतिउत्तर दिया। बाईबल स्कूल का एक जवान विद्यार्थी सभा के तुरन्त बाद उस महान् प्रचारक से मिला और उससे कहा, "मै उसी प्रकार से संसार को प्रचार करने के लिए दूँगा।" बुजुर्ग प्रचारक ने उसकी ओर देखा तथा कहा, पुत्र वास्तव में यही है जो मेरे लिए बहुमूल्य है।

"जब दूसरे आनन्द मनाए क्या उस समय आप उपवास कर सकते हैं?क्या आप सुबह जल्दी उठ कर, रात देर तक जाग सकते हैं, देर रात तक प्रार्थना करना, सख्त मेहनत कर सकते हैं-ताकि परमेश्वर आपके जीवन तथा सेवकाई से महिमा पा सकें?" हैनरी वाडसवर्थ लिखते हैं,

> महान् व्यक्ति का ऊँचाई तक पहुंचना तथा उसमें ठहरना
> अचानक ली गई किसी उड़ान से नहीं हुआ;
> परन्तु, जब उनके साथी सोते तो वह रात भर जाग
> कर ऊपर जाने का प्रयास करते।

1. अलग किए गए जीवन की शुरूआत स्वयं को पापों से अलग करके परमेश्वर तथा उसकी इच्छा की ओर बढ़ने से है। जब कभी पवित्र आत्मा कोई विचार, शब्द या क्रिया को प्रकट करता है जो परमेश्वर को निरादर देता है, हम उसी वक्त अपने पापों का पश्चाताप् करें। (पढ़े 1 यूहन्ना 1:9)। इस महान् आयत पर आधारित, बिल ब्राइट ने बड़ा महत्वपूर्ण अभ्यास सिखाया है जिसे "आत्मिक श्वास" कहा जाता है। हम पापों का पश्चाताप् श्वास लेते हुए करें। यूनानी भाषा में पश्चाताप् का अर्थ है सहमत होना या एक ही बात को दोहराना। जब हम अपने पापों के बारे में उस बात को दोहराते हैं जो परमेश्वर हम से कहता है, तो उसके साथ सहमत होना कि हां हमारे जीवन में विश्वासी होते हुए पाप का कोई स्थान नहीं तथा हम पाप से मुड़ गए हैं, फिर परमेश्वर सम्पूर्ण स्वच्छता का वादा करता है। हम परमेश्वर के वादे के अनुसार माफी को पाएंगें तथा उसे पवित्र आत्मा की नई ताज़गी के लिए कहें।

> यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।
>
> 1 यूहन्ना 1:9

इसी तरीके से, हम टूटे हुए सम्बन्ध को जोड़ सकते है। मैंने कई वर्षो तक "आत्मिक श्वास" का अभ्यास किया, कई बार कई एक ही दिन में पवित्र आत्मा हमारे जीवन के पाप के विषय में बताता है।

2. हम अपनी व्यक्तिगत जागृति के पर्यावरण के प्रति सावधान रहें।

कोई बात नही आपके आस पास का वातावरण कैसा है, आपका प्राण परमेश्वर के लिए सदा गर्मी को रखें। यदि हमें व्यक्तिगत जागृति को अनुभव करना है। तो कुछ शर्ते है जिनसे हमें मिलना है।

एक सौ वर्ष पूर्व वेलस में एक महान् जागृति आई, ईवैन रौकर्ट ने जागृति के चार शर्ते रखी। वे शर्ते आज भी उपयोगी है।

एक सौ वर्ष पूर्व वेलस में एक महान् जागृति आई, ईवैन रौकर्ट ने जागृति के चार शर्ते रखी। वे शर्ते आज भी उपयोगी है।

- प्रत्येक पापरूपी वस्तु को दूर रखें

शक की प्रत्येक बातें पवित्रताई के लिए बलिदान होनी चाहिए।

- पवित्र आत्मा की आवाज के प्रति आज्ञाकारी बनें।
- सभा में लोग मसीह का अंगीकार करें।

3. सेवकाई में व्यक्तिगत जिम्मेदारी को विश्वासयोग्यता से देखना हमारा ईश्वरीय जीवन जीने का सबसे महत्वपूर्ण हथियार है।

कई बर्षो से आज तक मैं सेवकाई में विश्वास योग्य मित्र से लगभग महीने में दो बार मिलता हूँ। हर समय जब हम मिलते है, हम एक दूसरे से कठिन प्रश्न पूछते थे। यह प्रश्न चार्लस सीवन्डल के सन्देशों के खाते पर अधारित हैं।

जब हम पिछले समय मिले थे तो...

- क्या आप परमेश्वर से रोजाना व्यक्तिगत समय व्यतीत करते है?
- क्या आप कभी किसी प्रश्नात्मक आर्थिक बातों में पड़े हैं?
- क्या आप गल्त तरीके से किसी स्त्री के साथ रहें है या कोई ओर बात जो गल्त ढंग से हुई हो?
- क्या आपने कभी अश्लील चित्र देखें हैं?
- क्या आप अच्छे यां बुरे रूप में अपने विवहित जीवन के बारे में बतांएगे?
- सुसमाचार के सेवक होते हुएं क्या आप अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य है?
- क्या आपने अभी अभी झूठ बोला?

मै आपको उत्साहित करता हूँ कि अपने लिए विश्वासयोग्य साथी या छोटा समूह ढूढें जो एक दूसरे को उत्साहित कर सकें।परमेश्वर के साथ

और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।
कुलुस्सियों 3:17

4. सबसे महत्वपूर्ण बात जो आप स्वयं में उत्पन्न कर सकते हैं कि परमेश्वर के साथ रोजाना व्यक्तिगत समय में अनुशासन।

स्टीवन औलफर्ड हमें याद दिलाता है कि, "यह विधिवाधिता का प्रश्न नहीं है, यह एक वफादारी का प्रश्न है।" डा. औलफर्ड सलाह देते हैं कि परमेश्वर के साथ प्रार्थना एवम् वचनो में हमारे समय में, हम को यह रोजाना अनुशासान की बातें सिखाते है।

- मेरा दिमाग परमेश्वर के वचन का प्रभुत्व करे। (पढ़े कुलुस्सियों 3:16)
- मेरा हृदय परमेश्वर की आत्मा से उत्तेजित रहे। (पढ़े इफिसियों 5:18)
- मेरी इच्छा परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित हों।(कुलुस्सियों 3:17)

मैं आपसे चुनौती देता हूँ कि आज आप अलग किए हुए जीवन के साथ समर्पन करें - यीशु के लिए अलग होना, सुसमाचार के लिए अलग होना, आपके परिवार के लिए अलग होना तथा आपकी बुलाहट के लिए अलग होना। ओसवाल्ड चैम्बरस अपनी भक्ति पुस्तिका में लिखते है," परमेश्वर हमें अक्सर एक चरम बिंदु पर ले आते है।यह जीवन का एक बड़ा मोड़ होता है।उस बिंदु से या तो हम एक व्यर्थ प्रकार के तथा बिखरे हुए जीवन की ओर मुड़ते जाते हैं या हम परमेश्वर की महिमा के लिए अधिक से अधिक प्रेरित होते जाते हैं उनकी महिमा के लिए मेरा सर्वोच्च समर्पण "

याद करें:

मै मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मै जीवीत न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है और मै शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। (गलतियों 2:20)

मूल सिद्धान्त:

हम परमेश्वर तथा उसकी इच्छा के लिए स्वंय को पापों से अलग किए हैं।

आपका प्रतिउतर:

- क्या आपने परमेश्वर के सन्मुख सभी जानने वाले पापों से क्षमा माँगी?
- क्या आप स्वयं को अलग किए हुए जीवन के लिए समर्पित करते है।

जीवन पुस्तक

नोट

जीवन पुस्तक

प्राण की सुरक्षा

पढ़े : नीतिवचन 22:4 मीका 6:8

प्रेरितो के काम 20:18 - 21;1 पतरस 5:5,6

हडसन टेलर चाइना के लिए मिशनरी थे, एक बार वह "हमारे प्रसिद्व अतिथि" के रूप में परिचित हुए। टेलर मँच की ओर बढ़े तथा उत्तर दिया, "प्रिय मित्रो, मै प्रसिद्वस्वामी का छोटा सा दास हूँ।"एन्ड्रीयु मर्रे एक जाने माने बाईबल अध्यापक थे। उनकी बहुत सी किताबे अभी भी उपलब्ध है तथा इनमें से प्रत्येक आत्मिक आहार का खज़ाना है। इस छोटी सी नम्रता, की पुस्तक में मर्रे लिखते हैं। कि "नम्रता सदाचार की माता है तथा प्राण की सुरक्षा के लिए स्थायी है।" मर्रे विश्वास करते हैं कि नम्रता एक वे सदाचार है जिसके द्वारा बाकी के सभी सदाचारों का जन्म हुआ है।

उसका यह भी मानना है कि हमारे प्राण की सबसे बड़ी सम्भाल हृदय की नम्रता है।इसलिए दूसरों के प्रति उत्तरदायी होना महत्वपूर्ण है, सबसे बड़ी प्राणो की सुरक्षा यह है कि रोज़ाना स्वयं को परमेश्वर के सामने विनम्र करें। हमें परमेश्वर के सामने टूटना है, तथा स्वयं की गहरी आवश्यक्ता को तथा उस पर सम्पूर्ण निर्भता को दिखाना है। परमेश्वर के सामने टूटना सेवकाई की विशेषता ही नही है, यह एक आवश्यक्ता है। (पढ़े भजन सहित 51:17)।

1. अपने हृदय को रोज़ाना परमेश्वर के सामने विनम्र करे।

हमारी ब्रीड़ा के लिए, बहुत कम लोग हैं जो अभिषेक तथा नम्रता दोनों के लिए योग्य है। परन्तु परमेश्वर का वचन उस घमण्ड से सावधान करता है जो आत्मिक नाश लाता है। यह सिद्वान्त हमेशा सही माना जाता है कि: ऊपर जाना आत्मिकता में गिरावट लाता है। (नीतिवचन 16:18)। यीशु ने उन लोगों के लिए एक अद्भुत वादा रखा है जो स्वयं को परमेश्वर के सामने विनम्र करते है: "धन्य है वे, जो मन के दीन हैं, क्यों कि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:3)। मन के दीन होने का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर पर अपनी सम्पूर्ण निर्भरता को समझें।

इस बात का ध्यान रखें कि आप कभी ऐसी प्रार्थना न करें कि परमेश्वर हमें नम्र करे। यह बहुत खतरनाक हो सकता है। बल्कि, हमें कदम उठाना होगा तथा स्वयं को नम्र करना होगा (पढ़े याकूब 4:6,10)

टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है हे परमेश्वर तूं टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नही जानता। (भजन 51:17)

2. परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत इतिहास रचें। मै आपसे वादा करता हूँ। आपके भविष्य के किसी स्थान पर गोलीयत आपका इन्तज़ार कर रहा है। आपके भविष्य में एक "दानव" है जिसका सामना आपको करना है। "सताव" का "दानव" आपको नाश करना चाहता है, तथा भीड़ में वह आपका नाश करना चाहता है। आपके पास कैसा विश्वास है कि उस दिन के खुले अपमान में आप विजेता होगें? छोटे दाऊद ने राजा शाऊल से यह कारण बताया था कि वह कैसे जानता है कि वह गोलीयत को हराएगा: "यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजों से बचाया है वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा" (1 शमूएल 17:37)। यह जवानी का घमण्ड नही था; यह गहरा अन्दरूणी विश्वास था जो उसने व्यक्तिगत विजय को जन्म दिया दाऊद का परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत इतिहास था जिसने उसे महान सामुहिक परीक्षा में विश्वास दिलाया। जब कोई अश्लीलता के शेर तथा विश्वास हीनता के भालू से वधिक हैं तो, आपमें भी वह विश्वास आएगा जब सामुहिक रूप से गोलीयत आपकी ओर बढ़ रहा होगा।

> यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दौनो के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचायेगा।
> 1 शामूएल 17:37

3. जानें कि मसीह यीशु में आप क्या हैं।

यहाँ ईश्वरहीन घमण्ड तथा विश्वास के मनुष्य के बीच में भिन्नता है। सेवकों में हम घमण्ड पाते है तथा वह भीतरी असुरक्षा उत्पन्न करते हैं। इस बात को भूल जाते हैं कि मसीह यीशु में विश्वासी होते हुए उन्हें एक विशेष जगह मिली है तथा वे स्वयं को छोटी सोच का हिस्सा बना लेते हैं। मसीह में हम परमेश्वर की धार्मिकता है। क्यों कि हम मसीह में है, हम परमेश्वर की सन्तान हैं। क्यों कि हम मसीह में है, हम उसके लिए राजदूत हैं। (पढ़े 2 कुरिन्थियों 5:17-21; इफसियों 4: 3; फिलिप्पयों 1:11)। हम नम्रता का पहरावा पहिने, सच्चाई में चलें इस बात को जानते हुए कि हम मसीह में क्या हैं। दूसरे शब्दो में हम यीशु के समान बनें। हम स्वयं को विनम्र करें, जैसा कि उसने किया। (पढ़े फिलिप्पयों 2: 5-11)

4. विनम्र हृदय वाले ही राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। यीशु ने सिखाया कि धन्य हैं वे जो नम्र हैं। (पढ़े मत्ती 5:5)। नम्रता कमज़ोरी नही है। नम्रता नियन्त्रण करने वाली ताकत है। नम्र व्यक्ति सोचता है कि उसके पास कोई ताकत नही है, पर उसकी सारी सामर्थ परमेश्वर है। यह आपकी दुया हो सकें:

नोट

"यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके साम्हने हम बेबस हैं और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिए?परन्तु हमारी आँखें तेरी ओर लगी हैं" (2 इतिहास 20: 12)। जैसे फिलिप बुरूक कहते हैं स्वयं को कभी भी अपने काम के बराबर न रखें। यदि हम घमण्डी हैं तो परमेश्वर स्वयं हमारा विरोद्ध करेगा। परन्तु यदि हम स्वयं उसके सामने विनम्र रहते हैं तो हमें मनुष्यों के आगे दृढ़ निश्चितता को रखेंगे तथा वह सही समय में हमें ऊँचा उठाएगा। यदि हमें परमेश्वर के हृदय के अनुसार के व्यक्ति बनना है तो हमें हमेशा याद रखना है कि, "परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इस लिए बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" (1 पतरस 5:5, 6)।

याद करें:

हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, वरन तुम सबके सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए (1 पतरस 5:5,6)।

मूल सिद्धान्त:

जानों की मसीह में आप क्या हैं, रोज़ाना स्वयं को परमेश्वर के साम्हने विनम्र करें तथा दृढ़ बने रहें तांकि वह अपने समय में आपको ऊँचा उठा सके।3

आपका प्रतिउत्तर:

- जानते हुए कि मसीह कौन हैं, घमण्ड तथा दृढ निश्चिता में भिन्नता पर मनन करें।
- रोज़ाना स्वयं को परमेश्वर के साम्हने विनम्र करें।
- परमेश्वर की दया के अनुसार विनम्रता में चलना सीखें।

जीवन पुस्तक
पहले यहाँ सेवकाई कीजिए

पढ़ें: इफिसियों 5:22-6:4

परमेश्वर ने हमें इस लिए नहीं बुलाया कि हम संसार को जीत लें तथा अपने परिवारों को खो दें। परन्तु एक डरा देने वाली संक्रामक है जो टूट रहे विवाहों में, बलवा करने वाली सन्तान तथा मसीही सेवकों में तलाक के रूप में समा गई है। यह हम सेवकों के परिवारों में पहले आवश्यक हो सकती है तथा फिर दूसरों में।

हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि: 1) परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध, 2) हमारे साथी एवम् बच्चों के साथ हमारा सम्बन्ध, 3) सेवकाई जो परमेश्वर ने हमें दी है। जीवन की माँगे हम पर दबाव डालती है तथा हम क्रम से पीछे चले जाते है परन्तु जब हम सेवकाई को ऊपर रखते हैं तो परमेश्वर तथा परिवारों के साथ हमारे सम्बन्ध अच्छे बन जाते हैं तथा नतीजे हैरान कर देते है।

1. परमेश्वर पतियों को अपने परिवारों के अत्मिक अगुवे कहके पुकारते हैं। आपके परिवार के अत्मिक स्वास्थ्य की जिम्मेदारी आपके ऊपर है। पतियों को वही बलिदान रूपी प्रेम अपनी पत्नीयों के लिए दिखाने की जरूरत है जिस प्रकार से मसीह ने अपनी दुल्हन के लिए दिखाया, अर्थात् कलीसीया के लिए। (पढ़ें: इफिसियों 5:25)

2. परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध के इलावा, आपके साथी के साथ आपका रिश्ता बनाना सबसे महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर पतियों से चाहता है कि वे अपनी पत्नीयों से प्रेम करें तथा अपनी पत्नीयों की आत्मिक उन्नति में उनकी सहायता करें। (पढ़े इफिसियों 5: 25-28)।

3. यहाँ कुछ बिन्दु हैं जिनका प्रयास आप प्रतिदिन कर सकते तथा आपके विवाहित जीवन की उन्नति में सहायता कर सकता है।

प्रत्येक दिन एक अवसर है जो आपके विवाह को उत्तम या खराब बनाएगा। जैसे कि माली बगीचे में पानी देने का ध्यान देते है आप निरन्तर अपने विवाह को जोतते रहें। यह चार साधरण अभ्यास आपके विवाह को सार्थी बनाने के लिए लम्बे समय तक चलेगा।

- प्रतिदिन इकट्ठे प्रार्थना करें।
- प्रतिदिन अपनी पत्नी से कहें कि

हे पतियों, अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।

इफिसियों 5:25

आप उनसे प्रेम करते हैं।

- प्रतिदिन उसकी सहायता के लिए कुछ करें।
- प्रत्येक दिन एक वास्तविक टिप्पणी दें।

4. यौन का पाप बाकी सभी पापों से अधिक नुक्सान को उत्पन्न करता है।

सुसमाचार के प्रचार के जीवन में अनैतिकता का अपराध इतना बड़ा है कि वे बहुत से लोगों के विश्वास को घायल करता है। हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है। (पढ़े । कुरिन्थियों 6: 19,20) मसीही होते हुए हमें अपने शरीर पर नियन्त्रण रखने की आवश्यक्ता है तथा पवित्रताई तथा आदर में जीएं। (पढ़े थिस्सलुनीकियों 4:3-8)। इसी वक्त, परमेश्वर के सामने शुद्ध जीवन जीने का निश्चय लें। परमेश्वर को अपना जीवन वाद्य के रूप में प्रस्ततु करें जिसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी हो सके (पढ़े रोमियों 12:1,2)।

5. यीशु ने सिखाया कि अविश्वास हृदय में आरम्भ होता है। (पढ़े मत्ती 15:19)।

शुद्धता के लिए युद्ध का मैदान मन है। आप शरीरिक अभिलाषाओं के विचारों के स्थान पर परमेश्वर को आदर देने के विचार रख कर अलग कर सकते हैं। आपके विचार आपके नियन्त्रण में हैं। यदि आप अपनी सोच का तरीका बदल देंगे, आपका जीवन बदल जाएगा। (पढ़े फिलिप्पयों 4:8) अविश्वास हृदय में उत्पन्न होता है। विश्वास योग्यता हृदय में बनी रहती है। आपकी पत्नी की सभी अदभुत् बातों को अपने हृदय में दोहराईए, तथा परमेश्वर का धन्यवाद करें जो उसे आपके पास लाए।

6. यहाँ कुछ सुरक्षाक्वच हैं जो पदार्थों में अविश्वास के विरूद्ध मदद् कर सकते है।

आप नैतिक असफलता में सम्भाल की दिवारे बनाने के जिम्मेदार हैं।

- **परमेश्वर के साथ रोज़ाना समय बिताने की आदत बनाए। परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत प्रार्थना, अराधना तथा परमेश्वर के वचन का समय निकालें।**
- विश्वासयोग्य मित्र या समूह के साथ सम्बन्ध बनाएं। एक दूसरे को रोज मिलें तथा एक दूसरे की गलतीयां बताएं यह एक बहुत बड़ा तोहफा होगा उस मित्र का जो आपकी आँखों में आँखे डाल कर प्रश्न पूछ सके अध्याय 11 में दिए गए है। मसीही अगुवा होते हुए आपके लिए यह बहुत आवश्यक है।
- स्वयं को परिस्थितियों के साथ समझौता करने वाला व्यक्ति न बनाएं। उनकी प्रारम्भिक सेवकाई में, विली ग्राहम ने देखा कि वह अपनी पत्नी को छोड़ किसी दूसरी स्त्री के साथ कभी कार में यां घर में नही बैठ सकते। सेवकाई में यदि आपको किसी स्त्री से मिलना है (ऐसा कार्य बुद्विमानी नहीं है) तो दरवाजे को पूरी तरह खुला रखें और इस बात का ध्यान रखें कि दूसरा व्यक्ति दरवाजे के बाहर रहे।
- घमण्डी न बने। बहुत से सेवक जो नैतिक रूप में गिरे है एक समय में उनमें घमण्ड आया था, "मेरे साथ ऐसा कभी नही हो सकता।" परमेश्वर के सामने नम्र हृदय रखें। परिक्षाओं के विरूद्ध स्तरक रहें। जब परीक्षा आती है, याद रखें कि परमेश्वर ने पहले ही उससे बाहर

निकलने का उपाय निकाल दिया है। (इफिसियों 6:1, 1 कुरिन्थियों 10:12,13)

7. पवित्र आत्मा पति तथा पिता होने की जिम्मेदारियों को पूरा करेगा।

बाईबल कहती है कि हे पतियो, "अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम कर के अपने आपको उसको दे दिया" (इफिसियों 5:25)। त्याग रूपी प्रेम की यह विशेषता तभी आवश्यक है जब आप पवित्र आत्मा से भरे हैं तथा उसके नियन्त्रण में है। इसीलिए पौलूस पतियों तथा पत्नीयों को यह कहते हुए चेतावनी देता है कि वे पवित्र आत्मा से भरें। (पढ़े इफिसियों 5:18-21)।

8. बाईबल बताती है कि किस प्रकार आप अपने खोए हुए प्रेम को वापस ला सकते है। यदि आपकी पत्नी के लिए आपका प्रेम ठण्डा हो चुका है तो आपके प्रेम को दुबारा जव्लनशील करने का तरीका है। जब की इफसुस की कलीसीया धैर्यवान तथा परिश्रमी थी वे अपने पहले प्रेम को खो चुके थे। (पढ़े प्रकाशितंवाक्य 2:2-5)। उसके सोए हुए प्रेम को वापिस लाने के लिए यीशु मसीह ने कुछ आदेश दिए हैं।

- याद रखें: अपने मन को विवाह के लिए तैयार करें न की उसके विरूद्ध। अपने विवाह के वादों को याद करें। उन अदभुत् समयों को याद करें जो आपने मिलकर अनुभव किए हैं। अपने पहले प्रेम की सुन्दरता को याद करे।
- पश्चाताप: अपनी पत्नी के प्रति ठण्डे हुए हृदय को याद करें। "पश्चाताप" के युनानी शब्द का अर्थ है "अपने मन को बदलना" इसीलिए अपने विवाह के प्रति अपने हृदय को बदलें। शत्रु के झूठों पर विश्वास करना छोड़ दे। परमेश्वर के वचन के द्वारा अपना मन ताजा करें। अपने मन को बदले तथा प्रत्येक उस बात से मुड़ें जो आपके विवाहित जीवन को खराब कर रही है।
- पहला कार्य करें: जब आप अपने प्रारम्भिक प्रेम में थे तो क्या करते थे?उन बातो को दोहराए। क्या आप उनके लिए फूल लाते थे। क्या आप निरन्तर उनसे कहते थे कि आप उन से प्रेम करते है?क्या आप उनकी ओर प्रभावी होते थे?आज पहले रूप में कार्य करना शुरू करें।

9. परमेश्वर पिता उन जिम्मेदारीयों को लेते है कि उनकी सन्तान को उनके रास्तों पर चलाए। (पढ़े इफिसियों 6:4)। यदि आप अपने परिवार की जिम्मेदारीयों के सही भण्डारी नही है तो आपकी सेवकाई प्रभावकारी नही होगी। (पढ़े 1 तीमुथियुस 3:4,5; 1 पतरस 3:7)।

याद करें:

हे पतियों अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जौ मसीह ने भी कलीसीया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।
(इफिसियों 5:25)

मूल सिद्धान्त:

परमेश्वर आपको आपके विवाह तथा परिवार का जिम्मेदार ठहराता है।

आपका प्रतिउत्तर:

- तीसरे बिन्दु दिए गए अभ्यास को आज से ही दोहराना शुरू करें।
- अनैतिकता के लिए आज ही सुरक्षा कवच पहने।

नोट

जीवन पुस्तक
शैतान की योजनाएं

पढ़ेः 2 कुरिन्थियों 2:10,11; गलतियों 5:16; 1 यूहन्ना 2:16,17

अगस्टीन के बदलाव से पहले उसने बदनाम पापी के रूप में जीवन व्यतीत किया। एक दिन एक बगीचे में उसने कुछ बच्चों को गाते हुए सुना, "ऊपर उठाओ और पढ़ो ऊपर उठाओ और पढ़ो।" मैदान में इधर-उधर देखते हुए अगस्टीन ने बाईबल की एक कापी देखी। पहली आयत जो उसके सामने आई वह रोमियो 13:14 "वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर के अभिलाषों को पूरा करने का उपाय न करो।" इस मुठभेड़ के द्वारा अगस्टीन महिमामय रूप में पुर्णजन्म पाया तथा एक महान् धर्मविज्ञानी बन गया।

मसीह यीशु में हमारे तथा परमेश्वर की योजना के विरूद्ध आने वाले प्रत्येक धावे से जीत प्राप्त कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर के वायदों पर खड़े होते हैं तथा हमारे नए जन्म में फल उत्पन्न करते हैं, हम विजेतायों से कहीं बढ़कर हैं। (पढ़े 2 पतरस 1:3,4; रोमियों 8:1-4)

1. बाईबल हमें तीन मोर्चो के विरूद्ध युद्ध करना सिखाता है:

- वचन में संसार का अनुवाद किस प्रकार से किया गया है संसार के सिद्धान्तों की ओर अविभावी होना परमेश्वर को निरादर देता है। हमें संसार की वस्तुओं से प्रेम नहीं करना। (पढ़े 1 यूहन्ना 2:15)

- वचन में माँस का अनुवाद हमारा छुटकारा न पाया हुआ स्वभाव है; मसीह यीशु से बाहर का पापरूपी स्वभाव

तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।
1 यूहन्ना 2:15

है। बाईबल के लेखक अधिकतर माँस एवम् लहू के मध्य के युद्ध को बताते हैं; पुराना तथा नया स्वभाव्।
(पढ़े गलतीयां 5:16-25; इफिसियों 4:22-24; कुल्लुस्यिों 3:8-14)।

- शैतान तथा उसकी दुष्ट शक्तियां हमारे विरूद्ध हैं। वह हमारे अभ्यास के प्रति रूचिवान नहीं है, वह सम्पूर्ण रूप से हमें नाश करना चाहता है परन्तु यीशु मसीह ने पहिले ही उसे क्रूस के द्वारा हरा दिया है।
(पढ़े लूका 22:31, 32; यूहन्ना 10:10; कुलुस्सियों 1:13,14; 2:15)

2. **शैतान की चालें नई नहीं हैं, न ही वे बहुत हैं।** वे व्यर्थ में ही अपनी पुरानी तरतीबों के द्वारा लोगों को भरमाता रहता है किन्तु शैतान की तरतीबें केवल क्षण भर की हैं:

- पैसे का भ्रष्टाचार। मैं कुछ सेवकों से भयभीत हूँ जो व्यक्तिगत आर्थिकता तथा सेवकाई की आर्थिकता के विषय में भिन्नता को नहीं समझ पाते। हमें वे लोग बनना है जो उस धन की ओर विशेष सच्चाई दिखाऐं जो हमारे पास हो। (पढ़े 1 तीमुथियुस 3:3; 6:6-11)।
- यौन का भ्रष्टाचार यह संसार भर के पासवानों मे विश्वास का एक चाबुक है। हमें स्वयं को पवित्र जीवन के लिए समर्पित करना है।
(पढ़े नीतिवचन 5:18-23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-7)।
- ताकत का भ्रष्टाचार हमें यीशु के समान दास रूपी अगुवे बनना है। यीशु ने यह बिल्कुल स्पष्ट किया है उसके चेलों का अगुवेपन का तरीका संसार के अगुवेपन के तरीके से बिल्कुल भिन्न है। (लूका 22:24-26)।
- कड़वाहट कड़वाहट से भरा हुआ व्यक्ति सेवकाई में अधिकतर समय तक प्रभावकारी नहीं हो सकता। सच्चाई यह है कि उसकी कड़वाहट आसपास के लोगों का आत्मिक वातावरण खराब कर देता है। (पढ़े प्रेरितों के काम 8:22,23; इब्रानियों 12:13-15)।
- विवशता का कोई व्यवहार कुछ लोग शराब तथा नशों से ग्रसित हैं। दूसरे, मनुष्यों की स्तुती के नशे में हैं। कुछ और यौन के नशे में हैं। कई बहुत अधिक भोजन खाने के नशे में हैं। परिपक्वता का निशान धन्यवाद के प्रति आशा रखना है। विवशता का व्यवहार जीवनों, परिवारों एवम् सेवकाई को नाश करते हैं।
- विनाशक विचारधारा बहुत सारे लोगों के बचपन में कई स्थानों पर, किसी ने नाकारात्मक विचार चक्र शुरू किया है वे कहते हैं, "तुम कभी भी महान् वस्तु को प्राप्त नहीं करोगे।" या "आप यह कर ही नहीं सकते। आप उस प्रकार का अगुवा नहीं बन सकते।" परमेश्वर चाहता है कि हम स्वयं में से कमज़ोर विचारधारा को निकालें।
(पढ़े रोमियों 12:1,2; इफिसियों 4:22-24 कुलुस्सियों 3:10)

- समय का बुरा प्रबन्ध यह बड़े पाप के रूप में दिखाई न देता होगा, सूची में कई और बातों की तरह। फिर भी समय का सही उपयोग न करने से शैतान की बाकी चालों के समान प्रभाव डालेगा (पढ़े कुलुस्सियों 4:5)।

3. **जैसे हम परीक्षा में डाले जाते हैं वैसे ही शैतान ने यीशु को भी परीक्षा में डाला।** बीयाबान में, शैतान ने यीशु को माँस की अभिलाषा से तृप्त किया, आँखों की अभिलाषा तथा जीवन के घमण्ड की अभिलाषा से किया। (पढ़े मत्ती 4:1-11)। यीशु हर उस तरीके से परीक्षा में डाला गया जिन में हम भी डाले जाते है। हमारे दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक होते हुए, जब हम परीक्षा में डाले जाते हैं तो वे उसे समझता है (पढ़े इब्रानियो 1:17,18; 4:15,16)। हर परीक्षा के प्रतिउत्तर में यीशु शैतान से कहते हैं, "यह लिखा है।" परमेश्वर के पुत्र ने परमेश्वर के वचन के हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हुए शैतान को हरा दिया। हम भी इसी प्रकार से परीक्षा के युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते है।

4. **हम परमेश्वर के सभी हथियारों को पहिन लें।** (पढ़े इफिसियों 6:10-18) जब हम परमेश्वर की ओर समर्पित होते हुए शत्रु को भगाते, आत्मिक हथियारों को पहन कर हमारे पास निश्चित विजय है (पढ़े याकूब 4:7)

5. **हमारा जोर शैतान पर न हो कर परमेश्वर की ओर हो।** "पाप की संचेतना" से बढ़कर हम "धर्मिकता की संचेतना" के स्वभाव को अपनाए फलादाई वृक्ष सूखे हुए पत्तों को झाड़ने की कोशिश नही करते। वे साधारणत मजबूत रहते तथा फल उत्पन्न करते रहते है। नए फल स्वय ही पुराने पत्तों को झाड़देते है। हमें स्वयं मे मसीह की नइ रचना डालने की आवश्क्ता है। हमें उसे भगाना है तथा परमेश्वर पर ध्यान देना है। (पढ़े 2 कुरिन्थियों 2:14; 1 पतरस 5:8,9)।

6. **ठीक इस समय में, यीशु हमारे लिए मध्यस्ता कर रहे हैं** शैतान का एक शीर्षक "भाईयों को फंसाने वाला है।" परन्तु हमारा रक्षक, मसीह यीशु हमारा युद्ध लड़ता है। (पढ़े इब्रनियों 2:14; 7; 25; प्रकाशित वाक्य 12:10)।

याद करें:

आप किसी ऐसी परीक्षा में नही पड़ें, जो मनुष्य के सहने से बाहर है; और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सार्म्थ से बाहर परीक्षा में पड़ने न देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।
(1 कुरिन्थियों 10:13)।

मूल सिद्धान्त:

परमेश्वर ने प्रत्येक परीक्षा के लिए जीत लिखी है।

आपका प्रतिउत्तर:

- क्या आप उस विजय में चलते हो जो परमेश्वर ने आपको दी है?
- पवित्र आत्मा से कहें कि आपके जीवन के प्रत्येक पाप को आपके सामने लाएं। उस पाप का पश्चाताप करें तथा पूर्ण विजय के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।

नोट

जीवन पुस्तक
मान्यता रखने वाली बात के लिए जीना

पढ़े: मत्ती 25:14-30; रोमियों 14:8-12;
1 कुरिन्थियों 3:11-16; 2 कुरिन्थियों 5:7-10

जब मैं बच्चा था मेरी माता मुझे सरकस में लेकर गई तथा मैं स्मरण करता हूं कि किस प्रकार से प्रशिक्षण देने वाले, सिंहों को शेरों की गुफा में केवल कोड़े तथा चार टांगों वाली कुर्सी के द्वारा ले जा रहे थे। कैसे यह छोटे से डंडे के सम्मान जैसे हथियार इतने खूंखार जानवर को डरा सकते हैं। उस समय से मैनें यह सीखा है कि पालतू सिंह के लिए एक कुर्सी कितना भयानक हथियार साबित हो सकती है। चार पैरों की कुर्सी पशुओं के ध्यान को खींचती है तथा उनके ध्यान में बाधा डालती है। सिंह इस बात का निर्णय नहीं ले पाता कि चारों में से उसे किस पैर पर ध्यान लगाना है तथा उसका ध्यान विचलित हो जाता है। उसका नतीजा खतरनाक साबित होता है।

इसी तरीके से बहुत से आज के मसीही ऐसे ही विचलित हो जाते हैं। तथा सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है उस पर ध्यान नही लगा पाते, वे बहुत सी दिशायों में चलें जाते है, ध्यान नही देते तथा यह खतरनाक हो जाता है। हमें अपने जीवन को आधारभूत बात पर डालना चाहिए कि सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है। हमारी पीढ़ी की प्रत्येक वस्तु हमें अनन्तकाल के जीवन से पीछे हटाना चाहती है। हम प्रत्येक उन वस्तुओं के लिए जीना चाहते है परन्तु उस बात को छोड़ कर जो वास्तव में मान्यता रखती है।

यहाँ तीन आने वाली प्रतियोगिताएं है जो मेरे जीवन के प्रत्येक दिन पर ध्यान डालती है। इन भविष्यों की प्रतियोगिताओं के ऊपर धयान देते हुए मैं उस बात पर ध्यान दूगाँ जो वास्तव में मान्यता रखती है।

1. सफेद सिहासन का न्याय मुझे सेवकाई के लिए

धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।
याकूब 1:12

उत्साहित करता है।

जौन भविष्य के उस समय को याद करता है जब प्रत्येक मृत्क परमेश्वर के सामने खड़ा होगा। वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नही लिखे होंगे वे आग की झील में डाले जाएंगे। यह प्रत्येक सच्चे मसीही को दूसरों को यीशु मसीह में लाने के लिए कायल करना है। (पढ़े प्रकाशितवाक्य 20:11.15)।

2. मसीह की न्याय की कुर्सी मुझे पवित्रवाई की उत्साहित करती है।

मारटिन लूथर आज्ञा देते हैं, "केवल दो ही दिन जो मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण हैः आज एवम् वह दिन होगा।" बदलाव के पश्चात हमारा सम्पूर्ण जीवन मसीह की न्याय की कुर्सी के सामने दिखाया जाएगा। वे सब जो हम आज करते हैं उस को दिन की रौशनी में दिखाया जाएगा। प्रत्येक वह बात जो आप आज करते हैं वे अनन्तकाल के लिए है। जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना स्वर्ग को खो देना होगा; किन्तु दूसरी बड़ी घटना यह होगी कि स्वर्ग में बिना उस इनाम के जाना जो हम मसीह यीशु के कदमों में रखेंगे। (पढ़े कुरिन्थियों 3:11.15; 2 कुरिन्थियों 5:10,11)।

हमें याद रखना है कि मुक्ति इनाम नही है। यह परमेश्वर का दिया हुआ मुफ्त वह तोहफा है जो हमें मसीह पर उसके क्रूस से किए गए कार्य पर विश्वास लाने से मिला है। पर एक बार जब हम बचाए गए, कुछ ऐसे इनाम हैं जो हमें मसीह की विश्वास योग्य सेवा के लिए मिलेगें। हमें इन इनामों की इच्छा क्यों रखनी है। क्यों कि स्वर्ग में महान् योग्यता की कीमत होगी। अधिकतर बाईबल इन इनामों को ताज कहती है, स्वर्ग मे जाकर मुकुट पहनने के विष्य मे मै रूचिवान नही हूँ, परन्तु मेरी इच्छा है कि मै इन मुकुटों को जरूर पहनूं। मुझे वे चाहिए जो बाईबल कहती है कि यीशु के कदमों के लिए यह अच्छा है, मुक्ति की कीमत नही परन्तु मुक्ति के लिए धन्यवाद एवम् अराधना। यह पाँच मुकुट है जिन्हें हम पा सकते है। तथा प्रत्येक मुकुट को पाने के लिए पाँच माँगे हैं जो बिल्कुल स्पष्ट हैं।

- धार्मिकता का मुकुट (पढ़े 2 तीमुथियुस 4:6-8) इस मुकुट का आदेश बिल्कुल स्पष्ट हैः विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ें किसी ने ऐसी टिप्पणी है कि "अच्छी लड़ाई वह है जिसे आप जीतते हैं।" हमारा युद्ध मनुष्यों के विरूद्ध में नहीं परन्तु शैतान तथा दुष्ट आत्माओं के विरूद्ध है। (पढ़े इफिसियों 6:10-18)

  प्रतियोगिता को समाप्त करें अधिकतर बहुत जल्दी हार मान ली जाती है। आपकी समस्या कितनी भी कठिन क्यों न हो, प्रतियोगिता में बने रहें। आप उसे खोएंगे नहीं यदि आप उसे छोड़ेंगे नहीं।

  विश्वास को बनाए रखें मसीही विश्वास की आधारभूत सच्चाई में समर्पित रहें। परमेश्वर के वचन की सच्चाई से अलग होकर "साधारण धर्म विज्ञानी न बनें।" (इफिसियों 4:14, 15; यहूदा 3)उसके प्रकाशन से प्रेम करें परमेश्वर के पूर्ण आगमन की अटूट आशा में आनन्दित हों। उसके आने की आशा हमें शुद्ध करती है। (पढ़े 1 यूहन्ना 2:28; 3:2,3)।
- जीवन का मुकुट (पढ़े याकूब 1:12; प्रकाशितवाक्य 2:10) श्री मान वालटर राल्फ को एक

बार आज्ञा दी गई कि वह अपने महंगे कोट को उतार कर नीचे बिछाएं ताकि उनकी रानी उस पर चल सके ताकि उनके पैरों में मिट्टी न लगे। किन्तु राल्फ इस बात को समझ गए थे कि वास्तव में राजसत्ता के लिए किया गया कार्य कभी भी खोता नहीं है। रानी ने वालटर राल्फ को उसके कार्य के लिए इनाम दिया। उसी प्रकार से जो कुछ भी हम अपने राजा के लिए करते हैं हम उसका इनाम पाऐंगे। जीवन का मुकुट कई बार "शहीदों का मुकुट" कहलाता है क्योंकि यह उनको दिया जाता है जो यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता दिखाते हैं तथा यहां तक कि स्वयं के जीवन को भी उसके लिए दे देते हैं। याकूब के अनुसार, यह उन्हें भी दिया जाता है जो परीक्षा में नहीं डाले जाते। इस बात पर भी ध्यान दें कि याकूब यह भी सलाह देता है कि जो वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते हैं वह परीक्षा में स्थिर रहते हैं।

- नाशरहित मुकुट (पढ़े 1 कुरिन्थियों 9:25)
  यह इनाम उनको मिलेगा जो अपने जीवन के प्रत्येक भागों को अनुशासन में रखते हैं। पौलूस कहता है कि दौड़ने वाला प्रबलता से प्रशिक्षण लेता है ताकि उस इनाम को पा सकें जो समय बीतने पर नाश हो जाता है। परन्तु हम अपने जीवन को नाश न होने वाले मुकुट के लिए तैयार करते हैं। इस प्रकार से आगे बढ़ते हुए कहता है कि उसने अपने शरीर को इस लिए अनुशासित किया ताकि वह आत्मिक प्रतियोगिता से न निकाला जाए। (पढ़े 1 कुरिन्थियों 9:26, 27; फिलिप्पियों 3:12-14)।
- आनन्द का मुकुट (पढ़े थिस्सलुनीकियों 2:19,20)
  पौलूस कहता है कि वह प्रसन्न होगा जब वह अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति में उन थिस्सलोनी विश्वासीयों को देखेगा जिनकी उसने मसीह में आने में सहायता की है। यह मुकुट "प्राणों को जीतने वालों को दिया जाएगा।" इस महान् कोई आनन्द नहीं कि हम किसी को मसीह यीशु के विश्वास में लाऐं।
- महिमा का मुकुट (पढ़े 1 पतरस 5:1-4)
  इस मुकुट की आशा प्रत्येक विश्वासयोग्य पासवान एवम् कलीसीया के लिए अगुवे के लिए है। आपकी सच्ची सफलता मसीह की न्याय की कुर्सी पर देखी जाएगी। सबसे बड़ा बलिदान यही है कि आप यीशु से यह सुने कि बहुत अच्छा। (पढ़े मत्ती 25:14-30)। हम इस बात का अन्दाज़ा भी नहीं लगा सकते जब परमेश्वर अपना प्रतिफल अपने विश्वासयोग्य दासों को देगा। (पढ़े 1 कुरिन्थियों 2:9)।

3. **परमेश्वर के सिंहासन पर अन्तराष्ट्रीय इकट्ठ को देखने के लिए मुझे उदेश्य् के लिए उत्साह मिलता है।** (पढ़े प्रकाशितवाक्य 5:9;7:9,10) महान् आज्ञा पूरी होगी। यीशु सभी देशों के छुटकारा पाए हुए लोगों, समूहों तथा भाषाओं में अराधना पाऐंगे। हमें उस महान् दिन में इतिहास बदलने का आदर मिला है।

नोट

याद करें:

हम सबके सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के साहम्ने खड़े होंगे। क्योंकि लिखा है कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साहम्ने टिकेगा और एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा" (रोमियों 14:10,11)।

मूल सिद्धान्त:

हमें अपने जीवन के अंतिम समय पर ध्यान देना है-क्योंकि वही है जो आधारभूत रूप से आवश्यक है।

आपका प्रतिउत्तर:

- प्रचारक बनने के लिए आपको किसने उत्साहित किया।
- व्यक्तिगत पवित्रताई के लिए आपको किसने उत्साहित किया।
- मिशन के लिए आपको किसने उत्साहित किया।